तत्त्वार्थसूत्रम्

Tattvārthasūtram

पञ्चमोऽध्यायः

Fifth Chapter

तत्त्वार्थसूत्र

पञ्चम अध्याय

इसमें अजीव द्रव्य की मुख्यता से अङ्कन किया गया है।

लोक के सम्पूर्ण भाग में **जीव–अजीव द्रव्य** दिखाये हैं।

धर्म द्रव्य – पानी में तैरती मछली के सहायक रूप में दर्शित है।

अधर्म द्रव्य – वृक्ष की छाया में बैठे राहगीर को सहायक रूप में प्रदर्शित किया है।

आकाश द्रव्य – लोक के अन्दर-बाहर के रिक्त स्थान में स्थित है।

काल द्रव्य – छोटी-छोटी बिन्दुओं के रूप में बताया है। सूर्य निश्चय काल व घड़ी व्यवहार काल का परिचायक है।

उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य – चित्र के नीचे कुम्हार को मिट्टी के लौंदे को चाक पर घुमाते हुए, घट व उसके टुकड़ों के रूप में दर्शाया है।

तत्त्वार्थसूत्रम्

Tattvārthasūtram

पञ्चमोऽध्यायः

Fifth Chapter

अजीव द्रव्यों का कथन

Description of Non-soul Substances

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ।।१।।

(अजीव-कायाः धर्म-अधर्म-आकाश-पुद्गलाः।)

Ajīvakāyā Dharmādharmākāśapudgalāḥ. (1)

शब्दार्थ : **अजीवकायाः** – अजीव काय (हैं); **धर्म–अधर्म–आकाश–पुद्गलाः** – धर्म, अधर्म, आकाश (और) पुद्गल।

Meaning of Words : **Ājīvakāyāḥ** - non-soul substances; **Dharma- Adharma-Ākāśa-Pudgalāḥ -** Dharma i.e. medium of motion of soul & matter, Adharma i.e. medium of rest of soul and matter, Ākāśa - space, Pudgal i.e. matter.

सूत्रार्थ : धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल – ये अजीव काय हैं।

English Rendering : Dharma, Adharma, Ākāśa and Pudgala are non-soul substances.

टीका : जो चेतना रहित हैं, वे अजीव द्रव्य कहलाते हैं। जिसमें एक से अधिक प्रदेश कहलाते हैं, वे काय कहलाते हैं। जो अजीव भी हैं और काय रूप भी हैं, वे अजीव-काय हैं। काय से धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल के बहु-प्रदेशी होने का प्रमाण प्राप्त होता है। जैन दर्शन के अनुसार पुद्गल का वह अविभागी अंश, जिसका आगे विभाजन न हो सके, आकाश में जितनी जगह घेरता है, उतने आकाश के स्थान को 'प्रदेश' कहते हैं। जीव में ऐसे 'प्रदेश' असंख्यात होते हैं।

पुद्गल एवं काल के सिवाय अन्य सभी द्रव्यों में असङ्ख्यात प्रदेश होते हैं। पुद्गल द्रव्य में सङ्ख्यात, असङ्ख्यात और अनन्त प्रदेश होते हैं। असंख्यात का अर्थ है जिसकी

गणना नहीं की जा सकती हो, लेकिन जिसकी एक सीमा हो; किन्तु अनन्त असीमित होता है। पुद्गल का अन्तिम अविभागी भाग परमाणु कहलाता है, जो एक प्रदेशी होता है। लेकिन उसके दो या दो से अधिक परमाणु बन्ध प्राप्त कर स्कन्ध रूप हो जाते हैं। स्कन्ध में सङ्ख्यात, असङ्ख्यात और अनन्त प्रदेश हो सकते हैं। इसलिए निश्चय नय से तो पुद्गल एक प्रदेशी है किन्तु उपचार से उसे स्कन्ध रूप बहु-प्रदेशी कहा गया है।

Comments : The substances which are insentient are called 'Ajīva Dravyas' (non-soul substances). The substances composed of more than two space-points are termed as 'Kāya' i.e. body. As such those substances which are non-soul as well as have 'Kāya', are called 'Ajīvakāya' i.e. non-soul bodies. 'Kāya' or body is intended to indicate a multitude of space-point of Dharma, Adharma, Ākāśa and Pudgala. It is to be clearly understood here that according to Jaina philosophy the space occupied by the smallest indivisible unit of Pudgala is termed as 'Pradeśa' or space-point. Jīva i.e. soul has in-numerable space-points of this kind.

All the substances except Pudgala and Kāla possess in-numerable space-points. Pudgala substance has numerable, in-numerable and infinite space-points. In-numerable means that which can not be counted but has a certain limit whereas infinite is unlimited. The indivisible particle of Pudgala is known as atom which has only one space-point. But its two or more atoms can unite together to form a Skandha i.e. molecule. 'Skandha' may have numerable, in-numerable and infinite space-points. Therefore from standard point of view, Pudgala has only one space-point but conventionally a Skandha is said to have multitude of space-points.

द्रव्यों का कथन
Description of Substances

द्रव्याणि ।।२।।

Dravyāṇi. (2)

शब्दार्थ : **द्रव्याणि –** द्रव्य (हैं)।

Meaning of Words : **Dravyāṇi -** (are) substances.

सूत्रार्थ : उक्त सभी द्रव्य हैं।

English Rendering : All the above are substances.

टीका : गुण और पर्यायों के समूह का नाम ही द्रव्य है। धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल में गुण और पर्यायें पाई जाती हैं, इसलिए वे द्रव्य हैं। गुण और पर्यायों के समूह का अलग-अलग अस्तित्व नहीं रहता।

Comments : A substance is a combination of attributes & modes. Dharma, Adharma, Ākāśa and Pudgala are found to possess both qualities and modes and therefore they are substances. Qualities and modes do not separately exist independant of substance.

जीव द्रव्य का कथन
Description of Soul-Substances

जीवाश्च ।।३।।

(जीवाः च।)

Jīvāśca. (3)

शब्दार्थ : **जीवाः च –** जीव भी (द्रव्य हैं)।

Meaning of Words : **Jīvāḥ ca -** Jīvas (souls) are also (substances).

सूत्रार्थ : जीव भी द्रव्य हैं।

English Rendering : Souls are also substances.

टीका : सूत्र एक में चार द्रव्यों - धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल का कथन है। इस सूत्र में जीव द्रव्य का कथन है। आगे सूत्र 39 में काल द्रव्य का कथन है। इस प्रकार कुल छह ही द्रव्य हैं।

पहले सूत्र में अजीव द्रव्यों की मुख्यता से कथन है और प्रस्तुत सूत्र में जीव द्रव्य की मुख्यता से कथन है। सूत्र में 'जीवाः' का प्रयोग बहुवचनात्मक होने से जीवों के बहुत प्रकार के होने का भाव प्रदर्शित किया गया है। सूत्रगत 'च' से 'जीव' द्रव्य है और उसके बहुप्रदेशी अर्थात् कायवान् होने का भी संकेत है।

Comments : Under the comments of Sūtra one, four substances - Dharma, Adharma, Ākāśa and Pudgala are described. In present Sūtra, description of Jīva Dravya is given. Under Sūtra no. 39 hereafter, Kāla Dravya is described. There are, thus in all six substances.

In the first Sūtra, description is mainly focused on non-sentient substances and in this Sūtra, focus is on the description of sentient ones. The use of plural word 'Jīvaḥ' in the Sūtra is indicative of many kinds of Jīvas. The use of the word 'Ca' in the Sūtra indicates the fact that the Jīva is a substance and has multitude of space-points and thus possessing Kāya i.e. body.

पूर्वोक्त द्रव्यों की विशेषताएँ
Special Characteristics of Substances

नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।।४।।

(नित्य-अवस्थितानि अरूपाणि।)

Nityāvasthitānyarūpāṇi. (4)

शब्दार्थ : **नित्य –** नित्य; **अवस्थितानि –** अपने स्वरूप में स्थिति; **अरूपाणि** – अरूपी।

Meaning of Words : **Nityā -** permanency of nature i.e. eternal; **Avasthitāni -** fixed in number i.e. constant; **Arūpāṇi -** colourless or formless.

सूत्रार्थ : उपरिलिखित द्रव्य नित्य हैं, अवस्थित हैं और अरूपी हैं।

English Rendering : Above mentioned substances are eternal, fixed in number and devoid of colour or form.

टीका : सभी द्रव्य कभी विनाश को प्राप्त नहीं होते, इसलिए नित्य हैं। चेतन और अचेतन रूप सभी द्रव्य अपने-अपने स्वरूप को कभी नहीं छोड़ते, अपनी छह सङ्ख्या का कभी उल्लङ्घन नहीं करते हैं और न ही अपने-अपने प्रदेशों की सङ्ख्या का त्याग करते हैं, इसलिए अवस्थित हैं। रूप, रस, गन्ध और वर्ण से रहित होने से अरूपी हैं।

Comments : As all the Dravyas are indestructible, hence they are eternal. All sentient and insentient substances never give-up their natural characteristices, neither do violate their fixed number being six; nor give-up their number of space-points. They, therefore, are immutable. They are without form, taste, smell and colour, hence are 'Arūpī'; i.e. formless or shapeless.

पुद्गल की विशेषताएँ
Characteristics of Pudgala Substance

रूपिणः पुद्गलाः ।।५।।

Rūpiṇaḥ Pudgalāḥ. (5)

शब्दार्थ : **रूपिणः** – रूपी; **पुद्गलाः** – पुद्गल (हैं)।

Meaning of Words : **Rūpiṇāḥ -** having colour (form); **Pudgalāḥ -** matter.

सूत्रार्थ : पुद्गल रूपी हैं।

English Rendering : Pudgalas have form, touch, taste, colour etc.).

टीका : सूत्र चार में द्रव्यों के अरूपी होने का कथन है। यहाँ पुद्गल को रूपी कहा गया है। यह एक अपवाद है। पुद्गल में रूप, रस, गन्ध और वर्ण पाये जाते हैं। जहाँ इनमें से एक भी गुण हो, वहाँ अन्य गुण भी रहते हैं, भले ही चाहे वे व्यक्त या अव्यक्त अवस्था में हों। रूपी का अर्थ है मूर्त अर्थात् इन्द्रियग्राह्य या जिसमें रूप, रस आदि गुण पाये जाते हैं। छह द्रव्यों में से केवल पुद्गल द्रव्य ही रूपी यानी मूर्त है।

Comments : Under comments of Sūtra 4, the substances are stated as 'Arūpī' i.e. formless or non-material. Here Pudgala is described as 'Rūpī' or having form. This is an exception. Pudgalas possess touch taste, smell and colour. If in these, there is any one of these qualities, the other qualities also do exist - may be manifested or unmanifested. 'Rūpī' means material objects i.e. perceptible by sense organs or that which possess qualities of touch, taste etc. Out of six substances, only Pudgala substance is 'Rūpī' i.e. material object.

द्रव्यों की सङ्ख्या
Numbers of Substances

आ आकाशादेकद्रव्याणि ।।६।।

(आ आकाशात्-एक-द्रव्याणि।)

Ā Ākāśādekadravyāṇi. (6)

शब्दार्थ : **आ –** पर्यन्त; **आकाशात् –** आकाश तक; **एक–द्रव्याणि –** (प्रत्येक)। एक द्रव्य हैं।

Meaning of Words : **Ā -** upto; **Ākāśāt -** (upto) space; **Ekadravyāṇi -** (each is) one whole substance.

सूत्रार्थ : आकाश पर्यन्त एक–एक द्रव्य हैं।

English Rendering : Up to space, (i.e. first three) Dharma, Adharma & Ākāśa each substance is one single whole.

टीका : प्रथम सूत्रगत धर्म, अधर्म और आकाश एक-एक ही द्रव्य हैं। उनके भाग नहीं हैं, जैसे जीव और पुद्गल के भाग हैं। जीव द्रव्य अनन्त हैं, पुद्गल अनन्तानन्त हैं और काल द्रव्य अणु रूप असङ्ख्यात हैं।

Comments : As mentioned in the first Sūtra, each Dharma, Adharma and Ākāśa substance is a single whole. These substances do

not have division like that of Jīva and Pudgala. Jīva Dravyas are infinite, Pudgalas are infinite times of infinite and Kāla substance is one/ single consisting of in-numerable time particles.

धर्म आदि द्रव्यों की विशेषताएँ
Characteristics of Dharma etc. Substances

निष्क्रियाणि च ।।७।।

Niṣkriyāṇi Ca. (7)

शब्दार्थ : **निष्क्रियाणि –** निष्क्रिय हैं; **च –** और।

Meaning of Words : **Niṣkriyāṇi -** without any activity; (i.e. in-active entities); **Ca -** and.

सूत्रार्थ : और धर्म, अधर्म और आकाश निष्क्रिय हैं।

English Rendering : And Dharma, Adharma & Ākāśa are non-active entities.

टीका : अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग निमित्त से उत्पन्न होने वाली जो पर्याय, द्रव्य के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्राप्त कराने का कारण है, वह क्रिया कहलाती है। जो इस प्रकार की क्रिया से रहित हैं, वे निष्क्रिय कहलाते हैं। धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्य निष्क्रिय हैं, अर्थात् वे जीव और पुद्गल की किसी भी क्रिया में अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग निमित्त बनते हुए भी निष्क्रिय रहते हैं।

धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्य जीव और पुद्गल के क्रमशः गमन, ठहरने और अवकाश देने में सहयोगी हैं। वे स्वयं न तो इन क्रियाओं में जीव या पुद्गल को प्रेरणा देते हैं और न सक्रिय रूप से भाग ही लेते हैं। वे सब एक सहकारी भूमिका में हैं। धर्म द्रव्य जीव और पुद्गल के गमन में उसी प्रकार सहकारी है जैसे मछली के लिए जल। अधर्म द्रव्य जीव और पुद्गल को ठहरने में उसी प्रकार सहायक है जैसे पथिक के लिए वृक्ष की छाया। आकाश द्रव्य सभी अन्य द्रव्यों को अवकाश देता है। ये तीनों द्रव्य भी एक-दूसरे को प्रभावित नहीं करते, केवल जीव और पुद्गल ही एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

Comments : The mode of a substance arising from internal and external reasons which cause its motion from one place to another is termed as 'activity'. The substances which are free from such activity are Dharma, Adharma and Ākāśa substances i.e. although they are the causes of internal and external activity of Jīvas and Pudgalas, they themselves do not involve in any activity.

Dharma, Adharma and Ākāśa substances assist in movement, rest and providing space respectively to Jīvas and Pudgalas. They neither themselves induce Jīvas or Pudgalas in their activities nor participate actively. They all are in assisting mode. Dharma substance facilitates movement of Jīvas and Pudgalas in the same manner as water facilitates fish in its movement. Adharma substance facilitates Jīvas and Pudgalas in rest or halt in the same manner as a shadow of a tree helps a traveller for taking rest. Ākāśa substance provides space to all other substances. All these three substances do not affect one another; only Jīva and Pudgala substances do affect each other.

धर्म, अधर्म और एक जीव के प्रदेशों की सङ्ख्या
Number of Space-points of Dharma, Adharma and One Soul

असङ्ख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम् ।।८।।

(असङ्ख्येयाः प्रदेशाः धर्म-अधर्म-एक-जीवानाम् ।)

Asaṅkhyeyāḥ Pradeśā Dharmādharmaikajīvānām. (8)

शब्दार्थ : **असङ्ख्येयाः –** असङ्ख्यात; **प्रदेशाः –** प्रदेश (होते हैं); **धर्माधर्मैकजीवानाम् –** धर्म, अधर्म और एक जीव के।

Meaning of Words : **Asaṅkhyeyāḥ -** in-numerable; **Pradeśāḥ -** space-points; **Dharmādharmaikajīvānām -** of Dharma, Adharma and of one soul.

सूत्रार्थ : धर्म, अधर्म और एक जीव के असङ्ख्यात प्रदेश होते हैं।

English Rendering : Each Dharma, Adharma and one soul consists of in-numerable space-points

टीका : इस सूत्र में एक जीव द्रव्य और धर्म, अधर्म द्रव्यों के प्रदेशों की सङ्ख्या का कथन है। एक अणु - परमाणु (द्रव्य का वह भाग जिसका आगे विभाजन न हो सके) आकाश में जितनी जगह घेरता है, उस स्थान को 'प्रदेश' कहते हैं। एक जीव, धर्म और अधर्म द्रव्य में असङ्ख्यात प्रदेश होते हैं। असङ्ख्यात का अर्थ है जिसके प्रदेशों के सङ्ख्या की गणना नहीं की जा सकती है। जीव द्रव्य अपने सङ्कोच-विस्तार गुण के कारण पूरे लोकाकाश में फैल जाने की योग्यता रखता है। आकाश का वह भाग, जहाँ जीव आदि छह द्रव्य पाये जाते हैं, उसे लोक या लोकाकाश कहते हैं। उसके बाहर सर्वत्र अलोकाकाश है। धर्म और अधर्म द्रव्य पूरे लोकाकाश में व्याप्त हैं, इसलिए वे असङ्ख्यात प्रदेशी हैं।

Comments : In this Sūtra, description of the number of space-points of Jīva, Dharma and Adharma substances is given. The space of the sky occupied by the smallest indivisible particle of matter known as 'Atom' or 'Paramāṇu' is termed as 'Pradeśa' (comments under Sūtra one). There are in-numerable space-points in one Jīva, Dharma and Adharma substances. In-numerable is not countable (comments under Sūtra one). Jīva substance has the capability of pervading the entire universe due to its nature of expansion & contraction. That part of Ākāśa where all the six substances Jīva etc. exist is called 'Loka' or 'Lokākāśa'. Beyond that is 'Alokākāśa' everywhere. Dharma and Adharma substances pervade the entire Lokākāśa and they therefore have in-numerable space-points.

आकाश के प्रदेशों की सङ्ख्या
Number of Space-points of Ākāśa

आकाशस्यानन्ताः ।।९।।

(आकाशस्य-अनन्ताः।)

Ākāśasyānantāḥ. (9)

शब्दार्थ : **आकाशस्य –** आकाश के; **अनन्ताः –** अनन्त प्रदेश हैं।

Meaning of Words : **Ākāśasya -** of Ākāśa; **Anantāḥ -** infinite space points.

सूत्रार्थ : आकाश द्रव्य के अनन्त प्रदेश हैं।

English Rendering : Space has infinite space-points.

टीका : आकाश के अनन्त प्रदेश हैं, क्योंकि आकाश का विस्तार लोकाकाश के बाहर अलोकाकाश में भी होता है। अनन्त असीमित है। असङ्ख्यात यद्यपि सङ्ख्या की दृष्टि से गणना योग्य नहीं है, परन्तु उसकी सीमा होती है । लेकिन अनन्त की कोई सीमा नहीं होती। निरन्तर व्यय होने पर भी जो राशि व्यय न हो, उसे अनन्त कहते हैं। यद्यपि आकाश एक अखण्ड द्रव्य है किन्तु यदि उसे अणु के द्वारा मापा जावे तो वह अनन्त अणुओं के फैलाव के बराबर होता है। इसलिए उसे अनन्त प्रदेशी कहा है।

Comments : Ākāśa has infinite space-points as Ākāśa pervades up to Alokākāśa beyond Lokākāśa. Infinite means without limit. Although from the point of view of counting, in-numerable is not countable but it has limits. Infinity has no limits. The number or quantity which never exhausts even after its constant utilization and without addition to it is known as 'Infinite'. Although Ākāśa is one-whole substance, but if measured in terms of an atom, its extent is equal to spreading of infinite atoms. Therefore it is said to be having infinite space-points.

पुद्गलों के प्रदेश
Space-points of Pudgalas

सङ्ख्येयाऽसङ्ख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।।१०।।

(सङ्ख्येय-असङ्ख्येयाः च पुद्गलानाम्।)

Saṅkhyeyā(a)saṅkhyeyāśca Pudgalānām. (10)

शब्दार्थ : **सङ्ख्येय –** सङ्ख्यात; **असङ्ख्येयाः –** असङ्ख्यात; **च –** और (अनन्त प्रदेश); **पुद्गलानाम् –** पुद्गलों के।

Meaning of Words : **Saṅkhyeya -** numerable; **Asaṅkhyeyāḥ -** in-numerable; **Ca** - and (infinite space-points); **Pudgalānām -** of Pudgalas.

सूत्रार्थ : पुद्गलों के सङ्ख्यात, असङ्ख्यात और अनन्त प्रदेश होते हैं।

English Rendering : There are numerable, in-numerable and infinite space-points of Pudgalas (matters).

टीका : पुद्गल द्रव्य मूर्त्त है और उसके स्कन्धों के खण्ड हो सकते हैं, क्योंकि संश्लेष और विश्लेष के द्वारा क्रमशः मिलने की और अलग होने की शक्ति मूर्त्त द्रव्य में होती है। इसलिए पुद्गल द्रव्य के छोटे-बड़े भाग हो सकते हैं। शुद्ध पुद्गल अणु तो अविभागी है, किन्तु अणुओं के मेल से सङ्ख्यात, असङ्ख्यात और अनन्त प्रदेश वाले स्कन्ध बनते हैं। इसलिए पुद्गल को सङ्ख्यात, असङ्ख्यात और अनन्त प्रदेशी कहा गया है। यहाँ यह भी समझना अपेक्षित है कि लोकाकाश तो असङ्ख्यात प्रदेशी है, लेकिन पुद्गल में सूक्ष्म परिणमन की शक्ति के कारण और आकाश की अवगाहन शक्ति के कारण एक-एक आकाश प्रदेश में एक साथ बहुत से पुद्गल रह सकते हैं।

सूत्र में सङ्ख्यात और असङ्ख्यात के कथन के साथ 'च' का उल्लेख है, जिससे पूर्व सूत्र के साथ अनुवृत्ति होकर पुद्गल अनन्त प्रदेशी भी है, ऐसा अर्थ निकलता है।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार पुद्गल दो प्रकार से पाया जाता है - साकार ठोस और निराकार ऊर्जा रूप में। साकार ठोस पुद्गल का ठोस, द्रव्य और वाष्प रूप में वर्गीकरण किया गया है। ये सभी स्कन्ध से निर्मित होते हैं। ठोस साकार पुद्गल जब निराकार ऊर्जा में परिवर्तित होते हैं तब उसमें से सङ्ख्यात, असङ्ख्यात और अनन्त परमाणु रूप सूक्ष्म स्कन्ध उत्पन्न होते हैं। परमाणुओं के परस्पर बन्ध से जो नयी पुद्गल पर्याय पैदा होती है, उसे स्कन्ध कहते हैं। स्कन्ध में सङ्ख्यात, असङ्ख्यात, अनन्त और अनन्तानन्त प्रदेश भी हो सकते हैं।

Comments : Pudgala (matter) substance is possessed with form i.e. (material form) and its Skandhas (aggregate of particles) can be broken into pieces because material objects have the quality of union & division or unifying & breaking. Therefore Pudgalas can be divided into small or big units. Atom in its pure state is indivisible but as a result of combination of atoms, Skandhas consisting of numerable, in-numer-

able and infinite space-points are formed. Therefore Pudgala is said to have numerable, in-numerable and infinite space-points. It is also to be understood here that Lokākāśa is having in-numerable space-points but because of the power of subtle transformation of Pudgalas and space providing power of Ākāśa substance, on each of the space-points of Ākāśa, many a Pudgalas can stay together in each and every space of Ākāśa.

In the Sūtra, the word 'Ca' added along with the words 'Saṁkhyāta' and 'Asaṁkhyāta' (i.e. numerable & in-numerable), connecting this Sūtra with the previous one; the inference is therefore deduced that Pudgala also has infinite space-points.

According to modern scientific research, Pudgalas are found in two forms - solid-form having shape and energy-form without any shape. Solid Pudgalas are classified as solids, liquid and gases. These are all made up of 'Skandhas'. When solid Pudgalas are transformed into shape-less energy, subtle-form of Skandhas having numerable, in-numerable and infinite atoms are formed. Combination of atoms resulting into a new mode is called 'Skandha'. Skandha can possess numerable, in-numerable, infinite and infinite times infinite space-points.

अणु के प्रदेश
Space-points of an Atom

नाणोः ।।११।।

(न अणोः ।)

Nāṇoḥ. (11)

शब्दार्थ : **नाणोः** – अणु के (प्रदेश) नहीं (हैं)।

Meaning of Words : **Nāṇoḥ -** (space-points) do not exist of atom.

सूत्रार्थ : अणु के प्रदेश नहीं होते।

English Rendering : (An indivisible) atom is without space-points.

टीका : पुद्गल द्रव्य का वह भाग, जिसका आगे विभाजन न हो सके, आकाश के जितने स्थान को घेरता है, उतना स्थान 'प्रदेश' कहलाता है। अतः अणु जितना स्थान घेरता है वह एक प्रदेश है। चूँकि अणु एक प्रदेशी है, वह सबसे छोटा भाग है; अतः उसके आगे भाग नहीं होते।

Comments : The space of Ākāśa occupied by the smallest particle of Pudgala which can not be further divided is known as 'Pradeśa'. As such, the area of Ākāśa occupied by one 'Atom' is termed as one Pradeśa i.e. space-point. Since an atom has only one space-point, it is the smallest particle and can not be further divided.

द्रव्यों का लोकाकाश में अवगाह

Lokākāśa provides Occupancy to all Substances

लोकाकाशेऽवगाहः ।।१२।।

(लोकाकाशे अवगाहः।)

Lokākāśe(a)vagāhaḥ. (12)

शब्दार्थ : **लोकाकाशे –** लोकाकाश में; **अवगाहः** – अवगाह है।

Meaning of Words : **Lokākāśe** - in the universe; **Avagāhaḥ** - provides occupancy.

सूत्रार्थ : धर्मादि द्रव्यों का लोकाकाश में अवगाह (स्थान) है।

English Rendering : Lokākāśa (i.e. universe) provides accommodation to all substances like Dharma etc.

टीका : धर्म, अधर्म, जीव और पुद्गल पूरे लोकाकाश में पाये जाते हैं। आकाश का वह भाग, जहाँ तक धर्म और अधर्म द्रव्य पाये जाते हैं, लोक या लोकाकाश कहलाता है। लोकाकाश के बाहर अलोकाकाश है। वहाँ ये द्रव्य नहीं पाये जाते।

Comments : Dharma, Adharma, Jīva and Pudgala pervade the entire Lokākāśa (universe). That part of Ākāśa in which Dharma & Adharma substances are found is called Lokākāśa. Beyond Lokākāśa is Alokākāśa where these substances are non-existant.

धर्म-अधर्म द्रव्यों का अवगाह
Occupancy of Dharma-Adharma Substances

धर्माधर्मयोः कृत्स्ने।।१३।।

(धर्म-अधर्मयोः कृत्स्ने।)

Dharmādharmayoḥ Kṛtsne. (13)

शब्दार्थ : **धर्माधर्मयोः** - धर्म और अधर्म (द्रव्यों का अवगाह); **कृत्स्ने** - सम्पूर्ण (लोकाकाश) में (है)।

Meaning of Words : **Dharmādharmayoḥ -** occupancy of Dharma & Adharma substances; **Kṛtsne -** pervade entirely (in Lokākāśa).

सूत्रार्थ : धर्म और अधर्म द्रव्य पूरे लोकाकाश में व्याप्त हैं।

English Rendering : Dharma and Adharma substances pervade the entire universe.

टीका : धर्म और अधर्म द्रव्य पूरे लोकाकाश में व्याप्त हैं। वे अमूर्त हैं, इसलिए एक-दूसरे को बाधित नहीं करते। पूरे लोकाकाश में धर्म और अधर्म द्रव्य उसी प्रकार फैले हुए हैं, जैसे तिल में तैल। इसी को बताने के लिए यहाँ 'कृत्स्ने' शब्द का प्रयोग किया है।

Comments : Dharm and Adharma substances pervade the entire universe. They are formless objects (Amūrta) and hence they do not cause impediment to one-another. Dharma and Adharma substances are pervading the entire universe in the same way as oil in oil-seeds. The word 'Kṛtsne' is used here only to indicate this fact.

पुद्गलों के अवगाह की विशेषता
Speciality of Occupancy of Pudgalas

एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ।।१४।।

(एक-प्रदेश-आदिषु भाज्यः पुद्गलानाम्।)

Ekapradeśādiṣu Bhājyaḥ Pudgalānām. (14)

शब्दार्थ : **एकप्रदेशादिषु –** (लोकाकाश के) एक प्रदेश आदि में; **भाज्यः –** विकल्पनीय (होने से); **पुद्गलानाम् –** पुद्गलों (द्रव्यों) का (अवगाह होता है)।

Meaning of Words : **Ekapradeśādiṣu -** from one space-point etc. onwards (of Lokākāśa)**; Bhājyaḥ -** presumably**; Pudgalānām -** occupancy of Pudgala substances.

सूत्रार्थ : पुद्गलों का अवगाह लोकाकाश के एक प्रदेश को आदि लेकर के सङ्ख्यात, असङ्ख्यात एवं अनन्त प्रदेशों में विकल्प से होता है।

English Rendering : Pudgalas may occupy from one space-point of Lokākāśa to numerable, in-numerable and infinite space-points.

टीका : आकाश के एक-प्रदेश में एक अणु का अवगाह होता है। बन्ध को प्राप्त हुए या पृथक्-पृथक् हुए दो या तीन आदि अणुओं का आकाश के एक, दो या तीन आदि प्रदेशों में अवगाह होता है। इसी प्रकार सङ्ख्यात, असङ्ख्यात और अनन्त प्रदेशों वाले स्कन्धों का लोक के एक, दो, तीन आदि सङ्ख्यात, असङ्ख्यात एवं अनन्त प्रदेशों में अवगाह होता है। अनन्त प्रदेश वाले पुद्गल स्कन्ध भी सूक्ष्म रूप में परिणमन करके लोक के सङ्ख्यात, असङ्ख्यात या एक, दो आदि प्रदेशों में अवगाह प्राप्त करते हैं।

Comments : The smallest one matter particle occupies one space-point of Ākāśa. Combined or separate, two or three atoms occupy one, two or three space-points of Ākāśa. Similarly Skandhas having numerable, in-numerable and infinite space-points occupy one, two, three etc. numerable, innumerable, infinite space-points of the universe. Pudgalas having infinite space-points assuming subtle form of Skandhas occupy numerable, innumerable or one, two etc. space-points of the universe.

जीवों का अवगाह
Occupancy of Souls

असङ्ख्येयभागादिषु जीवानाम् ।।१५।।

(असङ्ख्येय-भाग-आदिषु जीवानाम्।)

Asaṅkhyeyabhāgādiṣu Jīvānām. (15)

शब्दार्थ : **असङ्ख्येयभागादिषु –** (लोकाकाश के) असङ्ख्यात भाग आदि में; **जीवानाम् –** जीवों का (अवगाह होता है)।

Meaning of Words : **Asaṅkhyeyabhāgādiṣu** - one of the in-numerable parts etc. (of universe); **Jīvānām** - of souls (inhabit).

सूत्रार्थ : लोकाकाश के असङ्ख्यातवें भाग आदि में जीवों का अवगाह होता है।

English Rendering : Souls inhabit in one of the in-numerable parts etc. of the universe.

टीका : यदि लोक के असङ्ख्यात भाग किए जाएँ तो उस एक असङ्ख्यातवें भाग में एक जीव रह सकता है। सूत्र में 'आदि' शब्द से यह स्पष्ट है कि एक जीव ऐसे लोक के दो, तीन, चार, पाँच आदि असङ्ख्यात भागों में रह सकता है तथा लोक के एक असङ्ख्यातवें भाग को आदि लेकर सारे लोकाकाश में भी एक जीव फैल सकता है। जीव दो प्रकार के हैं - सूक्ष्म और बादर। सूक्ष्म जीव अनन्तानन्त हैं। वे परस्पर में और बादर जीवों से भी व्याघात को प्राप्त नहीं होते। अतः एक सूक्ष्म जीव लोकाकाश के जितने प्रदेशों में रहता है, उतने प्रदेशों में अनन्तों की संख्या में सूक्ष्म जीव रह सकते हैं।

Comments : If the universe is divided into in-numerable parts, a Jīva can accommodate in one of the in-numerable parts. The word 'Ādi' used in the Sūtra indicates that one Jīva can permeate in one, two, three, four, five or in-numerable such parts of the universe and one Jīva can also expand from one space-point to the entire universe. Jīvas are of two kinds - gross and subtle. Subtle ones are infinite times of infinite. They do not impede one - another or get impeded by the gross Jīvas. As such the space of the universe occupied by one subtle Jīva can also accommodate infinite number of subtle Jīvas in the same space.

प्रदेशसंहारविसर्प्पाभ्यां प्रदीपवत् ।।१६।।

(प्रदेश-संहार-विसर्प्पाभ्याम् प्रदीपवत्।)

Pradeśasaṁhāravisarppābhyām Pradīpavat. (16)

शब्दार्थ : **प्रदेश** - प्रदेश; **संहार** - सङ्कुचित होना; **विसर्प्पाभ्याम्** - फैलना; **प्रदीपवत्** - दीपक के समान।

Meaning of Words : **Pradeśa -** space-points; **Saṁhāra -** to contract; **Visarppābhyām -** due to expansion; **Pradīpavat -** like a lamp.

सूत्रार्थ : जीव के प्रदेशों का सङ्कोच और विस्तार प्रदीप के प्रकाश की भाँति होता है।

English Rendering : The property of contraction and expansion of the space-points of a soul is compared with the spread of light of a lamp.

टीका : स्वभाव से जीव के प्रदेश सङ्कोच-विस्तार गुण वाले हैं। प्रदेशों का संकोच होने पर जीव कम से कम लोक के असङ्ख्यातवें भाग क्षेत्र में रह सकता है और विस्तार होने पर सम्पूर्ण लोकाकाश में व्याप्त होकर रहता है। इस सूत्र में आत्मप्रदेशों के संकोच-विस्तार गुण की दीपक के प्रकाश से उपमा दी गई है। दीपक को यदि खुले आकाश में रख दिया जाए तो उसका प्रकाश सब ओर फैल जाता है। उसी दीपक को यदि एक घड़े में रख दिया जाए तो प्रकाश घड़े में ही समाहित हो जाता है। जीव को भी जैसा शरीर मिलता है, आत्मप्रदेश उसी में समाहित हो जाते हैं। आत्मप्रदेशों का सङ्कोच-विस्तार नामकर्म के विपाक के कारण होता है। चूँकि सिद्ध भगवान् के नामकर्म का क्षय हो चुका होता है, अतः उनके आत्मप्रदेशों में सङ्कोच-विस्तार नहीं पाया जाता।

Comments : By nature, the space-points of a Jīva have a property of expansion and contraction. On contraction, a Jīva can stay in the smallest one part out of in-numerable parts of Lokākāśa and on expansion can pervade the entire Lokākāśa. In this Sūtra, the property of expansion

& contraction of the space-points of a Jīva has been compared with the light of a lamp. If a lamp is placed in open space, its light spreads alround everywhere. If the same lamp is placed in a pot, its light remains confined to the pot only. Expansion and contraction of space-points is the result of the fruition of Nāmakarma. Since liberated beings have already destroyed the Nāmakarma, their space-points do not undergo expansion or contraction.

धर्म और अधर्म द्रव्यों का लक्षण
Characteristics of Dharma & Adharma Substances

गतिस्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ।।१७।।

(गति-स्थिति-उपग्रहौ धर्म-अधर्मयोः उपकारः।)

Gatisthityupagrahau Dharmādharmayorupakāraḥ. (17)

शब्दार्थ : **गति –** गति (गमन का साधन– एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने हेतु); **स्थिति –** ठहरना; **उपग्रहौ** – उपग्रह; **धर्माधर्मयोः** – धर्म एवं अधर्म द्रव्यों का **उपकारः –** उपकार (है)।

Meaning of Words : **Gati -** motion (from one place to another)**; Sthiti -** stationary (rest)**; Upagrahau -** encouragement in activities; **Dharmādharmayoḥ -** Dharma and Adharma; **Upakāraḥ -** to facilitate.

सूत्रार्थ : गति और स्थिति में सहायता करना क्रमशः धर्म और अधर्म द्रव्यों का उपकार है।

English Rendering : Dharma and Adharma substances are instrumental in movement and rest respectively.

टीका : सारे लोक में धर्म और अधर्म द्रव्य व्याप्त हैं। धर्म द्रव्य जीव और पुद्गलों के चलने में उसी प्रकार का माध्यम है जिस प्रकार मछली के गमन में जल है। इसी प्रकार अधर्म द्रव्य जीव और पुद्गलों के ठहरने में उसी प्रकार सहायक है जैसे वृक्ष की छाँव एक पथिक को ठहरने में सहायक होती है। धर्म और अधर्म द्रव्य

दोनों ही निष्क्रिय हैं और वे स्वयं जीव और पुद्गलों को न तो प्रेरणा देते हैं और न स्वयं कोई भाग लेते हैं। वे केवल एक माध्यम हैं। यहाँ यह स्पष्ट है कि कोई भी गमन या ठहरने की क्रिया शून्य में नहीं होती, उसके लिए किसी माध्यम की आवश्यकता होती है। ऐसे धर्म और अधर्म द्रव्य माध्यम हैं और ये पूरे लोक में सर्वत्र व्याप्त हैं।

आधुनिक विज्ञान में जीव और पुद्गलों के चलने और ठहरने की जो भूमिका 'ईथर' की मानी जाती है, वैसी ही जैन दर्शन में क्रमशः धर्म और अधर्म की मानी गई है।

Comments : Dharma and Adharma substances pervade the entire Lokākāśa. The Dharma substance facilitates in movement of Jīvas and Pudgalas in the same way as water facilitates movement of a fish. Similarly, Adharma substance is instrumental in rest of Jīvas and Pudgalas in the same way as the shadow of a tree for a traveller. Both Dharma and Adharma substances are inactive. They do not propel the Jīvas and Pudgalas nor do they participate in any activity. They are merely media. It is clear here that no activity of movement or rest can take place in a vacuum; it needs some media. Dharma and Adharma substances are such type of media and they pervade the entire universe i.e. Lokākāśa.

According to Jaina philosophy, the role played by Dharma and Adharma substances facilitating movement and rest respectively of Jīvas & Pudgalas, is akin to the role of 'Ether' assumed by modern science.

आकाश का उपकार
Obligation of Ākāśa

आकाशस्यावगाहः ।।१८।।

(आकाशस्य अवगाहः।)

Ākāśasyāvagāhaḥ. (18)

शब्दार्थ : **आकाशस्य –** आकाश का; **अवगाहः –** अवगाह (अवकाश देना उपकार है)।

Meaning of Words : **Ākāśasya -** of Ākāśa (space); **Avagāhaḥ -** obligation (to provide space).

सूत्रार्थ : समस्त द्रव्यों को अवकाश देना आकाश का उपकार है।

English Rendering : To provide space to all substances is the function of Ākāśa (space). This function is upakāra (obligation).

टीका : अवगाहन चाहने वाले जीव और पुद्गलों को अवकाश देने को अवगाह कहते हैं। आकाश द्रव्य सभी जीवों और पुद्गलों के साथ अन्य द्रव्यों - धर्म, अधर्म आदि को भी अवकाश देता है। यद्यपि धर्म, अधर्म आदि द्रव्य जीव और पुद्गलों की भाँति सक्रिय नहीं हैं, परन्तु वे पूरे लोकाकाश में व्याप्त हैं, अतः उपचार से आकाश अवकाश देता है। लोकाकाश के बाहर जो अलोकाकाश है, उसमें भी अवकाश देने की क्षमता है परन्तु वहाँ मात्र आकाश द्रव्य के सिवाय धर्म, अधर्म, जीव और पुद्गलों आदि का भी अस्तित्व नहीं पाया जाता। अतएव द्रव्यों को अवकाश देना आकाश का गुण है।

Comments : 'Avagāha' is the accommodation provided to Jīvas and Pudgalas seeking such accommodation. Ākāśa substance accommodates all substances i.e. Jīvas and Pudgalas and also Dharma, Adharma etc. substances. Although Dharma and Adharma substances are not active like Jīvas and Pudgalas, but they pervade the entire universe and as such conventionally the function of Ākāśa substance is to provid accommodation to them. The Alokākāśa beyond Lokākāśa has also the capability of providing such accommodation, but there exists only Ākāśa substance and not Dharma, Adharma substances. Hence there is no existence of Jīvas & Pudgalas there. As such to provide accommodation to substances is the quality of Ākāśa substance.

पुद्गलों का उपकार
Obligation of Pudgala Substances

शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलानाम्।।१९।।

(शरीर-वाङ्-मनस्-प्राण-अपानाः पुद्गलानाम्।)

Śarīravāṅmanaḥprāṇāpānāḥ Pudgalānām. (19)

शब्दार्थ : **शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः –** शरीर, वचन, मन, प्राण और अपान (उच्छ्वास-निःश्वास); **पुद्गलानाम् –** पुद्गलों का (उपकार है)।

Meaning of Words : **Śarīravāṅmanaḥprāṇāpānāḥ -** body, speech, mind, inspiration & respiration; **Pudgalānām -** obligational activities of Pudgalas.

सूत्रार्थ : शरीर, वचन, मन, प्राण और अपान पुद्गलों का उपकार है।

English Rendering : Body, speech, mind & respiration are obligatory functions or upakāras of Pudgalas.

टीका : शरीर पाँच प्रकार के हैं - औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस और कार्मण। इन शरीरों की रचना कार्मण पुद्गल परमाणुओं के निमित्त से ही होती है, इसलिए सभी शरीर पौद्गलिक ही हैं। वचन दो प्रकार के होते हैं - द्रव्य वचन और भाव वचन। इनमें से भाव वचन वीर्यान्तराय और मतिज्ञानावरण तथा श्रुतज्ञानावरण कर्मों के क्षयोपशम से और अङ्गोपाङ्ग नामकर्म के निमित्त से होता है, इसलिए वह पौद्गलिक है, क्योंकि पुद्गलों के अभाव में भाव वचन का सद्भाव नहीं पाया जाता। चूँकि इस प्रकार की सामर्थ्य से युक्त क्रिया वाले आत्मा के द्वारा प्रेरित होकर पुद्गल वचन रूप से परिणमन करते हैं, इसलिए द्रव्य वचन भी पौद्गलिक हैं।

दूसरे, द्रव्य वचन श्रोत्र इन्द्रिय के विषय हैं, इससे भी ज्ञात होता है कि वे पौद्गलिक हैं। वचन मूर्त्त इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण होते हैं, मूर्त दीवाल आदि से रुक जाते हैं, इसलिए वचन मूर्त हैं; अतः पौद्गलिक हैं। मन भी दो प्रकार का है - द्रव्य मन और भाव मन। लब्धि और उपयोग लक्षणवाला भाव मन पुद्गलों के आलम्बन से होता है, इसलिए पौद्गलिक है तथा ज्ञानावरण और वीर्यान्तराय के क्षयोपशम से तथा अङ्गोपाङ्ग नामकर्म के निमित्त से, जो पुद्गल गुण-दोष का विचार और स्मरण आदि उपयोग के सम्मुख हुए आत्मा के उपकारक हैं, वे ही पुद्गल द्रव्य मन रूप से परिणत होते हैं, अतः द्रव्य मन भी पौद्गलिक है। ज्ञानावरण और वीर्यान्तराय के क्षयोपशम तथा अङ्गोपाङ्ग नामकर्म के उदय की अपेक्षा रखने वाला आत्मा जिस वायु को कोष्ठ/उदर से बाहर निकालता है, उच्छ्वास लक्षण वाली उस वायु को प्राण कहते हैं। तथा वही आत्मा जिस बाहरी वायु को भीतर करता है, उस वायु को निःश्वास लक्षण अपान कहते हैं। इस प्रकार ये प्राण और अपान भी आत्मा का उपकार करते हैं, क्योंकि इनसे आत्मा शरीर धारण

किये रहता है। ये मन, प्राण और अपान मूर्त हैं, क्योंकि दूसरे मूर्त पदार्थों द्वारा इनका प्रतिघात आदि देखा जाता है। इस प्रकार शरीर, वचन, मन, प्राण और अपान रूप पुद्गलों का जीव पर उपकार है।

Comments : There are five kinds of bodies - Audārika (Gross), Vaikriyika (Transformable), Āhāraka (Translocational), Taijasa (Electric) and Kārmaṇa. All these bodies are made up of Kārmic particles. Therefore all bodies are material objects (Paudgalika). Speech is of two kinds - Dravya Vacana (Physical speech) and Bhāva Vacana (Psychical speech). Out of these, the psychical speech is the result of destruction-cum-subsidence of energy obstruction karma, sensuous and scriptural knowledge obstructive karma and on the rise of physique making karma (i.e. limbs and minor limbs making karma). Therefore it is a material object because in absence of material object, psychical speech can not manifest. Since physical speech manifests only when the soul is prompted by the capacity of psychical speech, physical speech is also material. Secondly, the physical speech is heard by the hearing sense organ, also proves that it is a material object. Speech is received by material sense organs, is obstructed by wall etc., therefore speech is material object and hence is composed of matter particles i.e. Paudgalika. Mind is of two kinds - physical and psychical. The psychical mind characterized by comprehension - capacity and consciousness is material as it seeks assistance of matter. Similarly, owing to destruction-cum-subsidence of knowledge obscuring and energy obstructive karmas and the rise of Nāmakarmas of limbs and minor limbs, particles of matter transformed in to mind assist the Jīvas willing to examine good and evil and to remember things etc. Hence the physical mind is also material.

The soul on the strength of the destruction-cum-subsidence of energy obstructive karma and knowledge obstructive karma and the rise of Nāmakarmas of limbs and minor limbs, exhales air from the lungs. The exhaling is called breath of life (Prāṇa). Inhaling air from the atmosphere by the soul is called the breath of inhalation (Apāna). Thus these two are also helpful to the soul as they enable the soul to keep up the

body intact. These mind, Prāṇa and Apāna are composed of material particles because these are seen impeded by other physical objects. In this way, Pudgalas in the mode of body, speech, mind, Prāṇa and Apāna are benefactor for the soul.

पुद्गलों के अन्य उपकार
Other Obligations of Pudgalas

सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ।।२०।।

(सुख-दुःख-जीवित-मरण-उपग्रहाः च।)

Sukhaduḥkhajīvitamarṇopagrahāśca. (20)

शब्दार्थ : **सुख** – प्रीति रूप परिणाम; **दुःख** – परिताप रूप परिणाम; **जीवित** – जीवन, **मरण** – मृत्यु होना; **उपग्रहाः** – उपग्रह (उपकार); **च** – और (पुद्गलों का)।

Meaning of Words : **Sukha -** happiness or pleasure; **Duḥkha -** unhappiness or suffering; **Jīvita -** life; **Maraṇa -** death; **Upagrahāḥ -** help; **Ca -** and (of Pudgalas).

सूत्रार्थ : सुख, दुःख, जीवन और मरण भी पुद्गलों का उपकार है।

English Rendering : Pleasure, sufferings, life and death are also the help rendered by Pudgalas.

टीका : साता वेदनीय के उदय रूप अन्तरङ्ग हेतु के होने पर और बाह्य द्रव्यादि के परिपाक के निमित्त से जो प्रीति रूप परिणाम होते हैं, वे सुख कहलाते हैं। असाता वेदनीय के उदय रूप अन्तरङ्ग हेतु के होने पर बाह्य द्रव्यादि के परिपाक के निमित्त से जो परिताप रूप परिणाम उत्पन्न होते हैं, वे दुःख कहलाते हैं। पर्याय के धारण करने में कारणभूत आयु कर्म के उदय से भव-स्थिति को धारण करने वाले जीव के प्राण एवं अपान क्रिया विशेष का विच्छेद नहीं होना जीवन है। प्राण एवं अपान क्रिया विशेष का विच्छेद होना मरण है। सूत्र में जो 'उपग्रह' शब्द का उपयोग है, वह पुद्गल का पुद्गलों

के ऊपर उपकार को भी इंगित करता है, जैसे काँसे आदि को राख आदि के द्वारा, जल आदि को कतक आदि के द्वारा और लोहे आदि को जल आदि के द्वारा उपकार किया जाता है। सूत्र में आया 'च' शब्द पुद्गलों के और भी अनेक उपकारों को इंगित करता है।

Comments : Feeling of joy experienced by Jīvas due to rise of pleasure giving karmas as an internal cause and association or availability of external objects etc. as an external cause is known as 'Sukha' or pleasure. Feeling of pain experienced as a result of rise of pain-giving-karmas as an internal cause and association of external objects as an external cause is called 'Duḥkha' or pain. The continuity of life is due to special activity of exhaling and inhaling of air (i.e. Prāṇa & Apāna) which is a result of the rise of age-determining karmas of a life-course of one particular mode. Stoppage of the activity of exhaling and inhaling results is death. The word 'Upagraha' used in the Sūtra is to indicate that matter also renders benefits (help) to other matters. For example, ash is used for cleaning brass etc., water is purified by (alum) etc., water is used for removal of impurities of iron etc. The use of the word 'Ca' in the Sūtra indicates several other benefits of Pudgalas.

जीव द्रव्यों का उपकार
Obligation of Soul Substances

परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।।२१।।

(परस्पर-उपग्रहः जीवानाम्।)

Parasparopagraho Jīvānām. (21)

शब्दार्थ : **परस्परोपग्रहः –** परस्पर उपग्रह (करना); **जीवानाम् –** जीवों का (उपकार है)।

Meaning of Words : **Parasparopagrahaḥ -** rendering help to one-another; **Jīvānām -** (obligatory function) of souls.

सूत्रार्थ : परस्पर में सहयोग करना जीवों का उपकार है।

English Rendering : Rendering help to one-another is the obligatory function of souls.

टीका : जीव का उपकार जीवों में ही परस्पर उपग्रह करना है। उदाहरण के लिए मालिक और नौकर का परस्पर उपकार है। नौकर द्वारा उचित सेवा कर मालिक का उपकार किया जाता है और मालिक नौकर को उचित पारिश्रमिक देकर उसका उपकार करता है। इसी प्रकार गुरु के द्वारा शिष्य का उपकार होता है, क्योंकि वे शिष्य को उचित शिक्षा और मार्गदर्शन देते हैं। शिष्य भी गुरु की आज्ञापालन कर उनका उपकार करता है। इस तरह व्यवहार से सभी जीव एक-दूसरे का उपकार करते हैं। यद्यपि यह प्रत्यक्षतः देखने में आता है, लेकिन इस सूत्र से पूर्ववर्ती सूत्र 20 में जो चार बातें कही गई थीं कि सुख, दुःख और जीवन-मरण में पुद्गल उपग्रह करते हैं, वे जीवों के संदर्भ में भी अपेक्षित हैं। यह उपग्रह केवल दो व्यक्तियों में परस्पर तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह एक, दो, तीन या अनेक जीवों का भी हो सकता है।

Comments : Rendering of reciprocal help among souls is a benefactory function of the souls. For example, mutual help between the master and the servant. The servant serves his master in an appropriate manner and in turn the master renders help by giving him remuneration for the service rendered. Similar is the case between a teacher and a taught. The Ācārya teaches his disciples the good and beneficial path to be followed. And in turn the disciple also renders help to the Ācārya by obeying his commands. In this way, in practice, all living beings render help to one-another. Although it is clearly visible in practice but as was stated in the comments of previous Sūtra 20 about matter rendering benefits in pleasure, pain, life & death, are also applicable in the case of living beings. It is also clear here that rendering help is not limited to a single individual, it could be for one, two, three or any number of living beings.

काल द्रव्य के उपकार

Obligations of Kāla Substance

वर्तनापरिणामक्रियाः परत्वापरत्वे च कालस्य ।।२२।।

(वर्तना-परिणाम-क्रियाः परत्व-अपरत्वे च कालस्य।)

Vartanāpariṇāmakriyāḥ Paratvāparatve Ca Kālasya. (22)

शब्दार्थ : **वर्तना** – वर्तना; **परिणाम** – परिणाम; **क्रियाः** – क्रिया; **परत्वापरत्वे** – परत्व-अपरत्व; **च** – और; **कालस्य** – काल के (उपकार हैं)।

Meaning of Words : **Vartanā -** continuous imperceptible minute changes in any matter; **Pariṇāma -** modification in to a new mode without vibrational activites; **Kriyāḥ -** modification with vibrational activites; **Paratvāparatve -** comparision of substances between old & new, junior and senior etc. **Ca -** and; **Kālasya -** (function of) Kāla Dravya.

सूत्रार्थ : वर्तना, परिणाम, क्रिया, परत्व और अपरत्व – ये काल द्रव्य के उपकार हैं।

English Rendering : Assisting substances in their Vartanā, Pariṇāma, Kriyā, Paratva and Aparatva are the helping functions of time.

टीका : हर एक द्रव्य प्रत्येक पर्याय में प्रति समय जो स्व-सत्ता की अनुभूति करता है, उसे वर्तना कहते हैं। अर्थात् वर्तना का अर्थ है परिवर्तन। सभी द्रव्यों में परिवर्तन होता रहता है। इस परिवर्तन में जो सहकारी है, वह काल द्रव्य कहलाता है। यद्यपि प्रत्येक द्रव्य स्वयमेव अपनी-अपनी पर्यायों के द्वारा वर्तन या परिवर्तन करते हैं, तथापि बाह्य निमित्त बिना पदार्थ परिवर्तन नहीं कर सकते। जो स्वयमेव बाह्य निमित्त के बिना परिवर्तन करता हुआ पदार्थ दूसरे पदार्थों को परिवर्तन कराता है, उस क्रिया को वर्तना कहते हैं। जैसे - कपड़ा, मकान, वस्त्र आदि में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। वह सूक्ष्म परिवर्तन है। वे निरन्तर जीर्ण होते रहते हैं। यह सब काल द्रव्य का प्रभाव है।

एक धर्म की निवृत्ति करके दूसरे धर्म के पैदा करने रूप और परिस्पन्दन से रहित द्रव्य की जो पर्याय है, उसे परिणाम कहते हैं। अर्थात् द्रव्यों में जो स्थूल परिवर्तन होता है, उसे परिणाम कहते हैं। जीव के क्रोध, मान, माया, लोभ आदि परिणाम हैं। पुद्गल के स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण परिणाम हैं। धर्म, अधर्म, आकाश और काल द्रव्यों का परिणाम अगुरुलघु गुण की वृद्धि-हानि से होता है। यह भी काल द्रव्य का उपकार है।

द्रव्य में जो परिस्पन्दन रूप परिणमन होता है, उसे क्रिया कहते हैं। उनमें गाड़ी आदि की प्रायोगिक क्रिया है और मेघ आदि की वैस्रसिक क्रिया है। 'परत्व' का अर्थ है पर्याय विशेष पहले की अपेक्षा पुरानी है। 'अपरत्व' से पर्याय विशेष के नयेपन या श्रेष्ठता को नापा जाता है।

काल दो प्रकार का है - परमार्थ काल और व्यवहार काल। इनमें से परमार्थ काल वर्तना लक्षण वाला है और परिणाम आदि शेष लक्षणोंवाला व्यवहार काल है। व्यवहार नय से द्रव्यों में हो रहे परिवर्तन को व्यवहार काल से जाना जाता है। व्यवहार काल को भूत, वर्तमान और भविष्य काल के रूप में विभाजित किया जाता है। इसके कई भाग हैं, जैसे - सेकण्ड, मिनट, घण्टा, दिवस, माह, वर्ष आदि।

Comments : Imperceptible changes take place incessantly every instant in every substance in all modes on account of their own nature. This is known as 'Vartanā'. 'Vartanā' means change and all substances continue to undergo change. The cause which assists in such a change is Kāla Dravya (i.e. time substance). Although all substances on their own undergo changes through their modes; yet no change is possible without external cause.That activity of change which occurs without external instrumental cause is called 'Vartanā'. For example, change continues to take place all the time in cloth, house, garments etc. that is imperceptible change (i.e. subtle change). The objects continue to decay all the time. It is due to the effect of Kāla Dravya.

The mode of a substance, which abandoning the previous state assumes a new state without vibration is Pariṇāma. It means that the gross change taking place in substances is called ' Pariṇāma'. Anger, pride, deceit, greed etc. are 'Pariṇāma' of a living being. Touch, taste, smell, colour etc. are Pariṇāma of Pudgalas. The mode of the media of motion (Dharma), rest (Adharma), Ākāśa and Kāla are due to the rhythmic rise and fall caused by 'Agurulaghu Guṇa'. This is also due to the cause of Kāla Dravya.

Transformation in the form of vibrations of the substances is known as 'Āctivity'. The movement of cart etc. is causal (Prāyogika) activity

and that of clouds is natural (Vaisrasika). 'Paratva' means old mode comparative to the previous one. 'Aparatva' refers to a new-mode or superiority or inferiority of the mode.

Kāla is of two kinds - real and conventional. Real time is characterized by 'Vartanā' and conventional by Pariṇāma etc. Conventional time is recognized by the changes taking place in substances from practical point of view. The conventional time is classified as past, present and future. It has several divisions like second, minute, hour, day, month, year etc.

पुद्गल के लक्षण
Characteristics of Pudgala Substance

स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ।।२३।।

(स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्तः पुद्गलाः।)

Sparśarasagandhavarṇavantaḥ Pudgalāḥ. (23)

शब्दार्थ : **स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः –** स्पर्श, रस, गन्ध, वर्णवाले; **पुद्गलाः –** पुद्गल (होते हैं)।

Meaning of Words : **Sparśarasagandhavarṇavantaḥ -** possess touch, taste, smell and colour; **Pudgalāḥ -** in matter.

सूत्रार्थ : पुद्गल स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण वाले होते हैं।

English Rendering : Touch, taste, smell and colour are the characteristics of Pudgalas.

टीका : जो स्पर्श किया जाता है, उसे या स्पर्शन मात्र को स्पर्श कहते हैं। स्पर्श के आठ प्रकार हैं - कोमल, कठोर, भारी, हल्का, ठण्डा, गरम, स्निग्ध और रूक्ष। जो स्वाद रूप होता है या स्वाद मात्र को रस कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं - तीखा (तिक्त), खट्टा, कड़ुआ, मीठा और कसैला। जो सूँघा जाता है या सूँघने मात्र को गन्ध कहते हैं। सुगन्ध और दुर्गन्ध इसके दो भेद हैं। जिसका कोई वर्ण है या वर्ण मात्र को वर्ण कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं - काला, नीला, लाल, सफेद और पीला ।

यहाँ यह जानना इष्ट है कि इन चार गुणों - स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण में से यदि एक भी गुण व्यक्त रूप में हो तो अन्य गुण भी अवश्य होते हैं। यह सम्भव है कि उनमें से कुछ गुण अव्यक्त हों।

Comments : What is touched or touching itself is a touch. It is of eight kinds - soft, hard, heavy, light, cold, hot, smooth and rough. What is tasted or tasting alone is a taste. It is of five kinds - bitter, sour, acidic, sweet and astringent. What is smelt or smelling alone is a smell. It is of two kinds - pleasant smell and unpleasant smell. That which is possessed of a colour or colour itself is called colour. It is of five kinds - black, blue, red, white and yellow.

It is to be noted here that out of these four qualities - touch, taste, smell and colour, If any one of them is manifested, the others necessarily exist. It is possible that some of them may be im-perceptible.

पुद्गलों की पर्यायें
Modes of Pudgalas

शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपोद्योतवन्तश्च ।।२४।।

(शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमः-छाया-आतप-उद्योतवन्तः च।)

Śabdabandhasaukṣmyasthaulyasaṁsthānabheda-tamaśchāyātapodyotavantaśca. (24)

शब्दार्थ : **शब्द** – शब्दवाले; **बन्ध** – बन्धवाले; **सौक्ष्म्य** – सूक्ष्मत्व वाले; **स्थौल्य** – स्थूलत्ववाले; **संस्थान** – संस्थानवाले; **भेद** – भेदवाले; **तमः** – अन्धकारवाले; **छाया** – छायावाले; **आतप** – आतपवाले; **उद्योतवन्तः** – उद्योतवाले; **च** – एवं।

Meaning of Words : **Śabda -** of sound; **Bandha -** of union; **Saukṣmya -** of fine-ness; **Sthaulya -** of grossness; **Saṁsthāna -** of shape of body; **Bheda -** of division; **Tamaḥ -** of darkness; **Chāyā -** shadow or image; **Ātapa -** of warm light (sun-shine); **Udyotavantaḥ -** of cool-light (moon-light); **Ca -**and.

सूत्रार्थ : शब्द, बन्ध, सौक्ष्म्य, स्थौल्य, संस्थान, भेद, अन्धकार, छाया, आतप और उद्योतवाले पुद्गल होते हैं यानी ये उनकी पर्यायें हैं।

English Rendering : Sound, union, fine-ness, grossness, figure, division, darkness, shadow or image, warm light (sun) and cool light (moon) are modifications or forms of Pudgalas.

टीका : **(क) शब्द –** शब्द के दो भेद हैं - भाषा रूप शब्द और अभाषा रूप शब्द। भाषा रूप शब्द भी दो प्रकार के हैं - साक्षर और अनक्षर। जिनसे शास्त्र रचे जाते हैं और जिनसे आर्यों और म्लेच्छों का व्यवहार चलता है, ऐसे संस्कृत शब्द और इससे विपरीत शब्द, ये सब साक्षर शब्द हैं। जिससे उनके सातिशय ज्ञान के स्वरूप का पता लगता है। दो इन्द्रिय आदि जीवों के शब्द अनक्षरात्मक शब्द हैं। ये दोनों प्रकार के शब्द प्रायोगिक हैं। अभाषात्मक शब्द दो प्रकार के हैं - प्रायोगिक और वैस्रसिक। मेघ आदि के निमित्त से जो शब्द उत्पन्न होते हैं, वे वैस्रसिक हैं। प्रायोगिक शब्द चार प्रकार के हैं - तत, वितत, घन और सुषिर/सौषिर। चमड़े से मढ़े हुए पुष्कर, भेरी और दुर्दुर से जो शब्द उत्पन्न होता है वह 'तत' शब्द है। तांतवाले वीणा और सुघोष आदि से उत्पन्न शब्द वितत है। ताल, घण्टा और लालन आदि के ताड़न से जो शब्द उत्पन्न होता है, वह 'घन' शब्द है। बाँसुरी और शंख आदि के फूँकने से जो शब्द उत्पन्न होता है, वह सुषिर/सौषिर शब्द है।

(ख) बन्ध – बन्ध के दो भेद हैं - वैस्रसिक बन्ध और प्रायोगिक बन्ध। जिसमें पुरुष का प्रयोग अपेक्षित नहीं है, वह वैस्रसिक बन्ध है। जैसे, स्निग्ध और रूक्ष गुण के निमित्त से होने वाला बिजली, उल्का, मेघ, अग्नि और इन्द्रधनुष आदि का विषयभूत बन्ध वैस्रसिक बन्ध है। और जो बन्ध पुरुष के निमित्त से होता है, वह प्रायोगिक बन्ध है। इसके भी दो भेद हैं - अजीव सम्बन्धी और जीवाजीव सम्बन्धी। लाख और लकड़ी आदि का अजीव सम्बन्धी प्रायोगिक बन्ध है। तथा कर्म और नो-कर्म का जो जीव से बन्ध होता है, वह जीवाजीव सम्बन्धी प्रायोगिक बन्ध है।

(ग) सौक्ष्म्य – सूक्ष्मता के दो भेद हैं - अन्त्य और आपेक्षिक। परमाणुओं में अन्त्य सूक्ष्मत्व है तथा बेल, आँवला और बेर आदि में आपेक्षिक सूक्ष्मत्व है।

(घ) स्थौल्य – स्थूलत्व भी दो प्रकार का है - अन्त्य और आपेक्षिक। जगद्व्यापी महास्कन्ध में अन्त्य स्थूलत्व है और बेर, आँवला तथा बेल आदि में आपेक्षिक स्थूलत्व है।

(ङ) संस्थान – संस्थान का अर्थ आकृति है। इसके दो भेद हैं - इत्थं-लक्षण और अनित्थं-लक्षण। जिसके विषय में 'यह संस्थान इस प्रकार का है' यह निर्देश किया जा सके, वह इत्थं-लक्षण संस्थान है। वृत्त, त्रिकोण, चतुष्कोण, आयत और परिमण्डल आदि ये सब इत्थंलक्षण संस्थान हैं। तथा इनसे अतिरिक्त मेघ आदि के आकार, जो कि अनेक प्रकार के हैं और जिनके विषय में 'यह इस प्रकार का है' यह कहा नहीं जा सकता है, वह अनित्थं-लक्षण संस्थान है।

(च) भेद – भेद के छह प्रकार हैं - उत्कर, चूर्ण, खण्ड, चूर्णिका, प्रतर और अणुचटन। करोंत आदि से जो लकड़ी आदि को चीरा जाता है, वह 'उत्कर' नाम का भेद है। जौ और गेहूँ आदि का जो सत्तू और कनक आदि बनता है, वह 'चूर्ण' नाम का भेद है। घट आदि के जो कपाल और शर्करा आदि टुकड़े होते हैं, वह 'खण्ड' है। उड़द और मूँग आदि का जो दलन किया जाता है, वह 'चूर्णिका' नाम का भेद है। मेघ के जो अलग-अलग पटल आदि होते हैं वह 'प्रतर' नाम का भेद है। तपाये हुए लोहे के गोले आदि को घन आदि से पीटने पर जो स्फुलिङ्गें निकलते हैं, वह 'अणुचटन' नाम का भेद है।

(छ) तम – जिससे दृष्टि में प्रतिबन्ध होता है और जो प्रकाश का विरोधी है, वह तम कहलाता है।

(ज) छाया – प्रकाश को रोकने वाले आवरणों के निमित्त से जो पैदा होती है, वह छाया कहलाती है। उसके दो भेद हैं - एक तो वर्ण आदि के विकार रूप से परिणत हुई और दूसरी प्रतिबिम्ब रूप।

(झ) आतप – जो सूर्य के निमित्त से उष्ण प्रकाश होता है, उसे आतप कहते हैं।

(ञ) उद्योत – चन्द्रकान्त मणि और जुगनू आदि के निमित्त से जो प्रकाश पैदा होता है, उसे उद्योत कहते हैं।

ये सब शब्द आदि पुद्गल द्रव्य की पर्यायें हैं।

Comments : **(a) Sound -** Sound is of two kinds - one partakes the nature of languages and other without languages. Sound in the form of languages is also of two kinds - expressed by letters and expressed

without letters. Languages with letters are used for composition of scriptures and for interaction among Āryas (noble persons) and Mlecchas. Such refined and non-refined sounds are all languages with letters indicating their transcendent form. The sound which indicates nature of development of knowledge of two sensed etc. living beings are languages without letters. Both these type of sounds are Prāyogika i.e. these need effort of living beings. Sounds without letters are of two kinds - contrived and natural. Sounds produced by clouds etc. are natural ones. Contrived sounds are of four kinds - Tata, Vitata, Ghana and Suṣira/Sauṣira. 'Tata' is produced from musical instruments covered with leather; namely the drum, the kettle-drum, the large kettle-drum etc. 'Vitata' is produced on stringed instruments such as the lute or the lyre, the violin and so on. 'Ghana' is produced from metallic instruments such as cymbals, bells, Lālana etc. Suṣira/Sauṣira is produced through wind instruments such as the flute, the conch etc.

(b) Union - Union is of two kinds - natural and contrived. That which is produced without any human-efforts is the natural one; for example the combination of matter is caused by the mixing of smooth and rough particles of matter (positive and negative electric charges) in lightening, meteoric showers, rain fall, fire, rainbow etc. Union produced by the human-efforts is the contrived union. It is also of two kinds - union of non-living substances and union of non-living substances & living beings. Union of non-living substances is that of resin & wood etc. The union of karmas & living beings (soul) is an example of non-living substances & living beings contrived union.

(c) Fineness - It is of two kinds - extreme and relative. Extreme fineness is found in the indivisible atom. Instances of relative fineness are the wood-apple, myrobalan, plum etc.

(d) Grossness - It is also of two kinds - Extreme and relative. The instances of extreme grossness is the biggest molecule of matter pervading the entire universe. Instances of relative grossness are the plum, myrobalan, wood-apple, etc.

(e) Shape means figure. It is of two kinds - that which can be defined (i.e. Itthaṁlakṣaṇa) and that which can not be defined (i.e. Anitthaṁlakṣaṇa). That about which it can be said that 'it is like this' is

the defined one. Examples are the circle, the triangle, the rectangle, the square and the globe etc. Apart from these, the shape of clouds etc. are of many kinds and it can not be said that 'it is like this' are examples of later one.

(f) Division - It is of six kinds - Utkara Cūrṇa, Khaṇḍa, Curṇikā, Pratara and Aṇucaṭana. Sawing a piece of wood is Utkara. Grinding barley, wheat etc. into flour etc. is cūrṇa. Breaking a pitcher etc. into potsherds and other fragments etc. is Khaṇḍā. Separating out blackgram, greengram etc. into two pieces is cūrṇikā. Separating layers of clouds etc. is Pratara. Emission of sparks of fire by hammering a red-hot iron etc. is Aṇucaṭana.

(g) Darkness - That which obstructs vision and negates lights is known as darkness.

(h) Shadow or image - It is produced by the objects which obstruct light. It is of two kinds - images as reflected in the mirror and uninverted images like shadows.

(i) Warm light - It is heat & light combined emanating from the sun etc.

(j) Cool-light - It is the cool-light emanated by the moon, the fire fly (glow-warm), jewells etc.

These are all the modifications of sound etc. related Pudgalas.

पुद्गलों के भेद
Classification of Pudgalas

अणवः स्कन्धाश्च ।।२५।।

(अणवः स्कन्धाः च।)

Aṇavaḥ Skandhāśca. (25)

शब्दार्थ : **अणवः** – अणुओं; **स्कन्धाः** – स्कन्धों; **च** – और।

Meaning of Words : **Aṇavaḥ -** atoms; **Skandhāḥ -** skandhas (aggregate of atoms); **Ca** - and.

सूत्रार्थ : पुद्गल द्रव्य के दो भेद हैं – अणुओं और स्कन्धों रूप।

English Rendering : Pudgala Dravyas have two divisions - (In the form of) Atoms & Skandhas.

टीका : अणु एक प्रदेशी होने से सबसे छोटा होता है, इसलिए उसे अणु कहते हैं। इसका आदि, मध्य और अन्त भी वही है और इसे इन्द्रियाँ ग्रहण नहीं कर सकतीं। ऐसा विभाग-रहित पुद्गल 'अणु' या 'परमाणु' कहलाता है। इसमें स्पर्श आदि गुण पाये जाते हैं।

जिसमें स्थूल रूप से पकड़ना, रखना आदि कार्य किये जा सकते हैं, वे स्कन्ध कहलाते हैं। स्कन्ध दो, तीन या इससे अधिक प्रदेशी होते हैं। वे स्पर्श आदि गुणों के साथ शब्द, बन्ध, सौक्ष्म्य आदि भेद से उत्पन्न होते हैं।

सूत्र में 'च' शब्द समुच्चयार्थक है। अर्थात् अणु ही पुद्गल नहीं है किन्तु स्कन्ध भी पुद्गल है।

Comments : Aṇu or atom occupies one space point and is the smallest particle and therefore it is named as 'Aṇu'. An atom in itself is the beginning, the middle and the end. It can not be perceived by the sense-organs. Such an indivisible Pudgala is called 'Aṇu' or 'Paramāṇu'. Qualities of touch, taste, smell and colour are found in an atom.

Those which in their gross state can be grasped and handled are called 'Skandhas' or molecules. Skandhas have two, three and more space-points. They are formed by sound, union, fineness etc. and possess touch etc. qualities.

The word 'Ca' in the Sūtra indicates inclusion i.e. not only an atom is Pudgala but molecules are also Pudgalas.

स्कन्धों की उत्पत्ति

Formation of Skandhas

भेदसङ्घातेभ्य उत्पद्यन्ते ।।२६।।

(भेद-सङ्घातेभ्यः उत्पद्यन्ते।)

Bhedasaṅghātebhyaḥ Utpadyante. (26)

शब्दार्थ : **भेदसङ्घातेभ्यः –** भेद, सङ्घात और भेद एवं सङ्घात यानी उभयरूप; **उत्पद्यन्ते –** (स्कन्ध) उत्पन्न होते हैं ।

Meaning of Words : **Bhedasaṅghātebhyaḥ -** division (i.e. fission), union (fusion) and fission-cum-fusion; **Utpadyante -** (Skandhas) are formed.

सूत्रार्थ : भेद से, संघात से और भेद एवं संघात रूप उभय प्रकार से स्कन्ध उत्पन्न होते हैं।

English Rendering : Skandhas are formed by division (fission), union (fusion) and by division-cum-union.

टीका : अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग कारणों से सङ्घात के विदारण (जुदा होने) को भेद कहते हैं। सङ्घात का अर्थ मिलना या इकट्ठा होना है। इस सूत्र में भेद, सङ्घात और भेद-सङ्घात - इन तीन के सङ्ग्रह के लिए बहुवचन का उपयोग किया गया है। स्कन्ध की उत्पत्ति मिले हुए अणुओं के पिण्ड का विभाग करने से, अणुओं को मिलने से या दोनों प्रकार यानी भेद और सङ्घात से होती है। दो अणुओं के मिलने से दो प्रदेश वाला स्कन्ध बन जाता है । दो प्रदेश वाला स्कन्ध और एक अणु या तीन अणुओं के मिलने से तीन प्रदेशी स्कन्ध बन जाता है । इसी प्रकार तीन प्रदेशी अणुओं वाला स्कन्ध और एक अणु अथवा दो-दो प्रदेशी स्कन्ध मिल जाने से या दो प्रदेशी स्कन्ध के साथ दो अणुओं के मिल जाने से चार प्रदेशी स्कन्ध बन जाता है। इस प्रकार से सङ्घात से सङ्ख्यात, असङ्ख्यात, अनन्त या अनन्तानन्त प्रदेश वाले स्कन्ध तक की उत्पत्ति हो जाती है। भेद से भी स्कन्धों की उत्पत्ति होती है। सङ्ख्यात, असङ्ख्यात और अनन्त प्रदेश वाले स्कन्धों के भेद (टुकड़े) करने पर दो प्रदेश पर्यन्त अनेक स्कन्ध बन जाते हैं। इसी प्रकार स्कन्धों के एक समय में कुछ भेद और कुछ के सङ्घात होने पर नये स्कन्ध की रचना होती है।

Comments : The splitting of molecules (aggregates) by internal and external causes is division. The aggregations means combination or joining. In this Sūtra, plural is used to include three processes i.e. of division, union and division-cum-union. Molecules are produced by division, union and both by division & union. Combination or union of two atoms produces a molecule having two space-points. Union of a

molecule having two space-points and an atom or union of three atoms produce a molecule of having three space-points. Similarly union of a molecule having three space-points and an atom or the union of two molecules having two space-points each or the union of a molecule having two space-points and two atoms produce a molecule having four space-point. In this way, unions produce molecules having numerable, in-numerable, infinite and infinite times of infinite space-point. Division also produces molecules. Division of molecules having numerable, in-numerable and infinite space-points produce molecules having space-points upto two. Similarly division of molecules and unions of some molecules at a particular moment produce a new molecule.

अणु की उत्पत्ति
Original Formation of an Atom

भेदादणुः ।।२७।।

(भेदात्-अणुः।)

Bhedādaṇuḥ. (27)

शब्दार्थ : **भेदादणुः** – भेद से अणु (उत्पन्न होता है)।

Meaning of Words : **Bhedādaṇuḥ -** atom (is produced) by division.

सूत्रार्थ : भेद से अणु उत्पन्न होता है।

English Rendering : Atom is produced by division (i.e. fission of Skandha).

टीका : अणु की उत्पत्ति स्कन्ध के भेद करने से ही होती है। अन्य किन्हीं प्रकार अर्थात् संघात या एक साथ भेद-संघात से भी नहीं होती, ऐसा नियम है।

Comments : An atom is produced only by division of molecule and not by any other process i.e. neither by union nor by union-cum-division. It is a rule.

भेदसङ्घाताभ्यां चाक्षुषः ।।२८।।

(भेदसङ्घाताभ्याम् चाक्षुषः।)

Bhedasaṅghātābhyāṁ Cākṣuṣaḥ. (28)

शब्दार्थ : **भेदसङ्घाताभ्याम्** – भेद-सङ्घात (दोनों की मिली-जुली क्रिया) से; **चाक्षुषः** – चाक्षुष (स्कन्ध)।

Meaning of Words : **Bhedasaṁghātābhyām -** (combined process) of fission & fusion; **Cākṣuṣaḥ -** Visible (i.e. Skandha).

सूत्रार्थ : भेद और सङ्घात की मिली-जुली प्रक्रिया से चाक्षुष स्कन्ध बनता है।

English Rendering : Skandha produced by combined action of division (fission) and union (fusion) is perceived by eyes.

टीका : अनन्तानन्त परमाणुओं के समुदाय से निष्पन्न होकर भी कोई स्कन्ध देखा जा सकता है और कोई अदृश्य (अचाक्षुष) हो सकता है।

चाक्षुष अर्थात् चक्षु इन्द्रिय से देखने योग्य स्कन्ध की उत्पत्ति भेद और सङ्घात से ही होती है, केवल भेद से या केवल सङ्घात से नहीं। जो अचाक्षुष स्कन्ध है, उसका भेद हो जाने पर भी उसका सूक्ष्म परिणाम बना रहने के कारण वह अचाक्षुष ही बना रह सकता है। लेकिन उस सूक्ष्म स्कन्ध का भेद होकर यदि किसी स्कन्ध से उसका सम्बन्ध हो जाये तो वह चाक्षुष हो जावेगा। इस प्रकार चाक्षुष स्कन्ध की उत्पत्ति भेद और सङ्घात रूप दोनों के एक साथ होने से होती है।

Comments : Out of Skandhas/molecule composed by infinite atoms, some may be visible and some may remain invisible.

The molecule perceivable by eyes is produced by the process of division and union and not by divison alone or union alone. The molecule which is invisible; on division shall remain invisible due to its continuity of fineness quality. But if the fine molecule on division unites with other molecule, it may become a visible molecule. In this way visible molecule is produced only by the process of division and union together at the same time.

द्रव्य का लक्षण
Characteristic of Substance

सद् द्रव्यलक्षणम् ।।२९।।

(सत् द्रव्य-लक्षणम्।)

Sad Dravyalakṣaṇam. (29)

शब्दार्थ : **सत्** – अविनाशी या अस्तित्व; **द्रव्यलक्षणम्** – द्रव्य का लक्षण है।

Meaning of Words : **Sat -** existence; **Dravyalakṣaṇam -** characteristic or attribute of a substance.

सूत्रार्थ : द्रव्य का लक्षण सत् अर्थात् जिसका अस्तित्व या सत्ता हो, वह द्रव्य है।

English Rendering : The characteristic of a substance is its continuous existence i.e. that which exists.

टीका : द्रव्य सत् है यानी उसका कभी विनाश नहीं होता; केवल पर्याय परिवर्तित होती रहती है।

Comments : A substance exists i.e. it is never destroyed; only its mode undergoes change.

सत् की परिभाषा
Definition of Sat (i.e. existence)

उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ।।३०।।

(उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य-युक्तम् सत्।)

Utpādavyayadhrauvyayuktaṁ Sat. (30)

शब्दार्थ : **उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तम्** – उत्पत्ति होना, नष्ट होना और अनादि पारिणामिक स्वभाव में स्थिर रहना; **सत्** – अस्तित्व।

Meaning of Words : **Utpādavyayadhrauvyayuktam -** origination, disappearance and to maintain inherent nature all the time; **Sat -** existence.

सूत्रार्थ : जो उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य इन तीनों से युक्त अर्थात् इन तीनों रूप है, वह सत् है।

English Rendering : Existence i.e. 'Sat' is characterized by origination, disappearance and in maintainence of inherent nature i.e. permanency.

टीका : अपने मूल स्वभाव को न छोड़कर नवीन पर्याय की उत्पत्ति को उत्पाद कहते हैं। पूर्व पर्याय का नाश हो जाना व्यय है। ध्रौव्य, द्रव्य के उस स्वभाव का नाम है जो द्रव्य की सभी पर्यायों में रहता है और जिसका कभी विनाश नहीं होता।

द्रव्य दो प्रकार के हैं - जीव (चेतन) और अजीव (अचेतन)। वे अपने पारिणामिक स्वभाव को कभी नहीं छोड़ते हैं; किन्तु अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग निमित्त मिलने पर नवीन अवस्था प्राप्त होती रहती है, वही उत्पाद है। जैसे, मिट्टी के पिण्ड की घट पर्याय। इसमें घट रूप आकार की उत्पत्ति 'उत्पाद' है और पिण्ड रूप आकार का त्याग 'व्यय' है। अनादिकालीन जो पारिणामिक स्वभाव है, उसका व्यय और उदय रूप उत्पाद नहीं होता, किन्तु वह स्थिर रहता है; इसलिये उसे ध्रुव कहते हैं। द्रव्य की अनादि पारिणामिक स्वभाव रूप स्थिरता का नाम ध्रौव्य है। जैसे, मिट्टी के पिण्ड या घट आदि में मिट्टी का अन्वय बना रहता है।

उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य द्रव्य का सामान्य स्वभाव है। यह जीव और अजीव दोनों में पाया जाता है।

Comments : Origination is the attainment of new modes by souls or other substances without giving up their essential characteristics. Loss of former mode is disappearance. The inherent nature or quality of the substance, which continues to exist in all the modes is known as permanence (Dhrauvya). It never gets destroyed or annihilated.

Substances are of two kinds - Jīva (sentient) and Ajīva (insentient). They do not give up their natural characteristics at any time and continue to attain new modes by means of external and internal causes - that is origination. For example, production of a pitcher from clay. In production of a pitcher, the loss of lump shape of clay is diappearance (Vyaya).

Eternal natural characteristics of a substance never originate and disappear; they are permanent and therefore they are known as Dhrauvya or permanent. The permanence of the eternal natural characteristics of a susbtance is named as Dhrauvya. For instance, the characteristics of clay remain constant in the lump as well as in the pitcher shapes.

Origination, disappearance and permanence are common characteristics of the substance. They are found in both sentient and insentient substances.

नित्य का लक्षण

Characteristic of Permanency

तद्भावाव्ययं नित्यम् ।।३१।।

(तद्भाव-अव्ययम् नित्यम्।)

Tadbhāvāvyayaṁ Nityam. (31)

शब्दार्थ : **तद्भाव** - उसका भाव; **अव्ययम्** - अविनाशी; **नित्यम्** - हमेशा।

Meaning of Words : **Tadbhāva -** nature of that; **Avyayam -** indestructible; **Nityam -** always i.e. permanent.

सूत्रार्थ : अपने भाव से च्युत नहीं होना नित्य है।

English Rendering : Permanence is indestructability of the (essential) nature of that.

टीका : 'यह वही है' इस प्रकार के स्मरण को प्रत्यभिज्ञान कहते हैं और जो प्रत्यभिज्ञान का कारण है, वह तद्भाव है। इस प्रकार का स्मरण अकस्मात् नहीं होता और जो इसका कारण है, वही तद्भाव है। यदि पूर्व वस्तु का सर्वथा नाश हो जाए या सर्वथा नयी वस्तु का उत्पाद माना जावे, तो इससे स्मरण की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

Comments : 'This is that only' such a recollection is 'Pratya-bhijñāna' i.e. recognition and the very cause of such a recollection or recognition is 'Tadbhāva' or intrinsic nature. That recognition does not occur accidentally and its reason is only 'Tadbhāva'. If it be considered that the old thing has completely disappeared or that an entirely new thing has come in to existence, then there can be no rememberance or recognition.

विरोधी धर्मों की सिद्धि
Establishment of Contradictory Characteristics

अर्पितानर्पितसिद्धेः ।।३२।।

(अर्पित-अनर्पित-सिद्धेः।)

Arpitānarpitasiddheḥ. (32)

शब्दार्थ : **अर्पित** – मुख्य; **अनर्पित** – गौण; **सिद्धेः** – सिद्धि के लिये।

Meaning of Words : **Arpita -** main or prominence; **Anarpita -** secondary importance; **Siddheḥ** - for establishing (a point).

सूत्रार्थ : मुख्यता और गौणता की अपेक्षा एक वस्तु में विरोधी से मालूम पड़ने वाले दो धर्मों की सिद्धि होती है।

English Rendering : From primary & secondary point of views seemingly contradictory two different characteristics exist simultaneously in a thing.

टीका : अनेकात्मक वस्तु के जिस धर्म की प्रयोजनवश विवक्षा होती है, या विवक्षित जिस धर्म को प्रधानता मिलती है, उसे अर्पित या उपनीत कहते हैं। जिन धर्मों के विद्यमान रहने पर भी विवक्षा नहीं होती, उन्हें अनर्पित कहते हैं। अनर्पित अर्थात् गौण। वस्तु अनेक धर्मात्मक है। एक ही मनुष्य पिता, पुत्र, भ्राता, चाचा आदि अनेक धर्मों को धारण करता है। वह अपने पुत्र की अपेक्षा पिता है, पिता की

अपेक्षा पुत्र है। अतः अपेक्षा भेद से एक ही वस्तु में अनेक धर्म रहने में कोई विरोध नहीं है। द्रव्य सामान्य की अपेक्षा नित्य है, किन्तु विशेष पर्याय की अपेक्षा अनित्य है। इसी प्रकार विभिन्न विरोधी धर्म वस्तु में स्थित होते हैं।

Comments : 'Arpita' or 'Upanīta' means giving importance to a certain characteristic out of infinite number of attributes of a substance for expressing the use or need of that particular characteristic or view-point. The characteristics which are present but are not expressed are called 'Anarpita'. Anarpita means that they are of secondary importance. Every body and every thing has manifold characteristics. A person is a father, son, brother, uncle etc. at the same time. He is a father in relation to his son and son in relation to his father. As such there is no contradiction in having several contradictory characteristics at the same time in a thing from relative consideration or point of view. Substance is permanent from the point of view of general properties and not permanent from the point of view of specific mode. In the same manner, different contradictory characteristics exist in a thing simultancously.

बन्ध के हेतु
Means of Bondage

स्निग्धरूक्षत्वाद् बन्धः ।।३३।।

(स्निग्ध-रूक्षत्वात् बन्धः।)

Snigdharūkṣatvād Bandhaḥ. (33)

शब्दार्थ : **स्निग्धरूक्षत्वात्**– स्निग्धत्व और रूक्षत्व से; **बन्धः** – बन्ध (होता है)।

Meaning of Words : **Snigdharūkṣatvāt -** smoothness (greasiness) and roughness; **Bandhaḥ -** union (takes place).

सूत्रार्थ : स्निग्धत्व और रूक्षत्व से बन्ध होता है।

English Rendering : Combination or union (of atoms) takes place by virtue of greasiness and dryness (properties associated with them).

टीका : बाह्य और अभ्यन्तर कारण से जो स्नेह पर्याय उत्पन्न होती है, उससे पुद्गल स्निग्ध कहलाता है तथा रूखेपन के कारण पुद्गल रूक्ष कहा जाता है। पुद्गल का चिकने गुण रूप जो धर्म/भाव है, वह स्निग्धत्व है और इससे जो विपरीत परिणमन है, वह रूक्षत्व है।

स्निग्ध और रूक्ष गुणवाले दो परमाणुओं के मिलने से द्व्यणुक रूप स्कन्ध और तीन परमाणुओं के मिलने से त्र्यणुक रूप स्कन्ध की उत्पत्ति होती है। इसी प्रकार सङ्ख्यात, असङ्ख्यात और अनन्त परमाणुवाले स्कन्धों की उत्पत्ति भी होती है। स्निग्ध और रूक्ष गुण के एक से लेकर अनन्त तक भेद होते हैं। जैसे - जल, बकरी का दूध, गाय का दूध, भैंस का दूध और ऊँटनी का दूध आदि में स्निग्ध गुण की उत्तरोत्तर अधिकता है, उसी प्रकार धूलि, रेत, पत्थर, वज्र आदि में रूक्ष गुण की उत्तरोत्तर अधिकता है। इसी प्रकार पुद्गल परमाणुओं में स्निग्ध और रूक्ष गुणों का उत्कर्ष और अपकर्ष पाया जाता है।

Comments : Combination of atoms takes place by virtue of greasy and dry properties associated with them. Owing to internal and external causes, the greasy property is manifested and as such the Pudgala is said to be greasy and because of dryness, Pudgala is said to be dry. The mode of Pudgala having greasy nature is known as greasiness and the mode contrary to it is roughness.

On combination of two atoms of greasy and dry properties, a molecule of two atoms is produced. Combination of three atoms produce a molecule of three atoms. Similarly the formation of molecules of numerable, in-numerable and infinite space points is to be understood. There are infinite kinds of greasy and rough properties. For instance, the greasy property is present in increasing degree in water, goat's milk, cow's milk, buffalo's milk, camel's milk etc. Dryness is present in increasing degree in dust, sand, stone, thunderbolt etc. Similarly it is inferred that in atoms, greasiness and dryness exist in varying by increasing and decreasing degrees.

बन्ध न होने का कारण
Reason for Non-Bondage

न जघन्यगुणानाम् ।।३४।।

(न जघन्य-गुणानाम् ।)

Na Jaghanyaguṇānām. (34)

शब्दार्थ : **न** – नहीं; **जघन्य** – सबसे कम (अविभागी अंश); **गुणानाम्** – गुणों (भागों) का (बन्ध नहीं होता)।

Meaning of Words : **Na -** not; **Jaghanya -** smallest part (not further divisible); **Guṇānām** - of the parts (bondage does not take place).

सूत्रार्थ : जघन्य गुणोंवाले (पुद्गलों) का बन्ध नहीं होता।

English Rendering : No union between the lowest degree of properties (of Pudgalas) take place.

टीका : प्रत्येक पुद्गल में स्निग्ध या रूक्ष गुण (भाग) एक से लेकर अनन्त तक रह सकते हैं। गुण उस अविभागी शक्ति के अंश का नाम है, जिसका आगे विभाग न किया जा सके। जिन पुद्गलों में स्निग्धता या रूक्षता का एक ही गुण (भाग) रहता है, उनका परस्पर बन्ध नहीं हो सकता। जघन्य एक स्निग्ध शक्ति रूप गुण (भाग) धारक का एक, दो, तीन आदि अनन्त गुणवाले स्निग्ध या रूक्ष गुणवालों के साथ बन्ध नहीं होगा। इसी प्रकार एक रूक्ष शक्ति रूप गुण (भाग) धारक का एक, दो, तीन आदि अनन्त गुणवाले स्निग्ध या रूक्ष के साथ बन्ध नहीं होगा।

Comments : In every Pudgala, there could be greasy and dry properties from one to infinite numbers. 'Guṇa' or property is that part which can not be further divided. Those Pudgalas which possess only one degree of either greasy or dry property can not combine with each other. There is no combination of one degree of greasiness with one, two, numerable, innumerable or infinite degrees of greasiness or dryness. In the same manner, there is no combination of one degree of dryness with one, two, numerable, innumerable or infinite degrees of dryness or greasiness.

बन्ध के अयोग्य अन्य कारण
Other Reasons for Non-Combination

गुणसाम्ये सदृशानाम् ।।३५।।

Guṇasāmye Sadṛśānām. (35)

शब्दार्थ : **गुणसाम्ये**– गुणों की समानता; **सदृशानाम्** – सदृशों (गुणवालों) का।

Meaning of Words : **Guṇasāmye -** same degree (of property); **Sadṛśānām -** of same class (of Pudgalas).

सूत्रार्थ : गुणों की समानता होने पर तुल्य जातिवालों का बन्ध नहीं होता है।

English Rendering : There is no union between equal degree of the quality of same class of Pudgalas.

टीका : रूक्ष और स्निग्ध ये दो विरोधी गुण हैं। जिसमें रूक्ष गुण होता है उसमें स्निग्ध गुण नहीं होता और जिसमें स्निग्ध गुण होता है उसमें रूक्ष गुण नहीं होता। वे गुण ही बन्ध के कारण होते हैं। जो स्निग्ध और रूक्ष गुण जघन्य शक्त्यंश लिये होते हैं उन पुद्गल परमाणुओं का बंध नहीं होता। इसी प्रकार गुण की समानता के होने पर सदृशों का भी बन्ध नहीं होता, किन्तु द्व्यधिक गुणवाले पुद्गल परमाणु आदि का ही द्वयहीन गुणवाले पुद्गल परमाणु आदि के साथ बन्ध होता है। ऐसा बन्ध स्निग्ध गुणवालों का स्निग्ध गुणवालों के साथ, रूक्ष गुणवालों का रूक्ष गुणवालों के साथ और स्निग्ध गुणवालों का रूक्ष गुणवालों के साथ होता है, यह नियम है।

Comments : Greasyness and dryness are two opposite properties. Those Pudgalas which possess greasiness, do not possess dryness and those which possess dryness do not possess greasiness. These properties are the causes for combination. Greasy or dry properties having minimum degrees do not combine. Similarly there is no combination between equal degrees of the same property. But those possessing two degrees more do combine with those possessing two less degrees. Such combination takes place with those having greasy properties and also both having dry properties or having greasy property with having dry property and vice-versa. This is the rule for combination.

बन्ध की इष्ट व्यवस्था

Desirable properties for Bondage

द्व्यधिकादिगुणानां तु ।।३६।।

(द्वि-अधिक-आदि-गुणानाम् तु।)

Dvyadhikādiguṇānām Tu. (36)

शब्दार्थ : **द्व्यधिकादि** – दो अधिक आदि; **गुणानाम्** – गुणों का (शक्ति अंश); **तु** – लेकिन।

Meaning of Words : **Dvyadhikādi -** two more etc.; **Guṇānām -** degree of property; **Tu -** but.

सूत्रार्थ : लेकिन दो अधिक आदि गुणवाले शक्त्यंशवाले का बन्ध होता है।

English Rendering : But bond takes place of those having the difference of two or more degree (of properties.)

टीका : जिसमें दो गुण अधिक हों, उसे 'द्व्यधिक' कहते हैं। सूत्र में 'आदि' शब्द प्रकारवाची है; इससे द्व्यधिकपना ज्ञात होता है। अर्थात् दो अधिक आदि गुणवाले शक्त्यंशवाले का बन्ध होता है। दो गुणवाले स्निग्ध शक्त्यंशवाले का एक, दो और तीन गुणवाले स्निग्ध या रूक्ष शक्त्यंशवाले के साथ बन्ध नहीं होगा, किन्तु चार गुणवाले स्निग्ध या रूक्ष के साथ बन्ध होगा। दो गुणवाले स्निग्ध का पाँच, छह आदि अनन्त गुणवाले स्निग्ध या रूक्ष के साथ भी बन्ध नहीं होगा। तीन गुणवाले स्निग्ध का पाँच गुण-वाले स्निग्ध या रूक्ष के साथ ही बन्ध होगा, अन्य गुणवाले के साथ नहीं। इसी प्रकार दो गुणवाले रूक्ष का चार गुणवाले रूक्ष या स्निग्ध के साथ ही बन्ध होगा, अन्य गुणवाले के साथ नहीं। इसी प्रकार अन्य के भी बन्ध का क्रम है।

सूत्र में 'तु' पद विशेषणपरक है जिससे बन्ध के प्रतिषेध का निवारण और बन्ध का विधान होता है।

Comments : That which has two degrees more is called 'Dvyadhika'. The word 'Ādi' in the Sūtra indicates manner; it shows increase by two units. That is combination takes place if there is

difference in degrees by two. There will be no combination of two degrees of greasy with one, two or three degrees of greasy or dry ones but combination will take place with four degrees of greasy or dry. There will be no combination of two degrees with five, six etc., infinite greasy or dry ones. There will be combination of three degrees with that of five degrees of greasy or dry and not with others. In the same way, two degrees of dry will combine with four degrees of dry or greasy ones and not with others. In the same manner, combination of others is to be understood.

The word 'Tu' in he Sūtra is the qualifying term. It particularizes combination and excludes what is excepted.

बन्ध होने पर विशेषता
Speciality of Resulting Properties on Bondage

बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ।।३७।।

(बन्धे अधिकौ पारिणामिकौ च।)

Bandhe(a)dhikau Pāriṇāmikau Ca. (37)

शब्दार्थ : **बन्धे** – बन्ध होने पर; **अधिकौ** – दो अधिक (गुण शक्त्यंश वाले); **पारिणामिकौ** – (कम गुणवाले शक्त्यंशवाले को अपने रूप) परिणमन कराने वाले; **च** – और।

Meaning of Words : **Bandhe -** on combination; **Adhikau -** (Pudgalas having) more than two (degrees of properties); **Pāriṇāmikau** - transformation of those having lesser degrees into those having more degrees (of property); **Ca** - and.

सूत्रार्थ : और बन्ध होने पर दो अधिक गुणवाले पुद्गल कम गुणवाले पुद्गलों को अपने में परिणत कर लेते हैं।

English Rendering : In the process of combination, the Pudgalas having two more degrees of properties transform those of lesser degree in to their own properties.

टीका : नूतन अवस्था को उत्पन्न कर देना पारिणामिकत्व है। जैसे, गीला गुड़ अपने ऊपर पड़ी हुई धूलि को गुड़ रूप परिणत कर लेता है, उसी प्रकार चार गुणवाला दो गुणवाले को अपने रूप में परिणत कर लेता है। अर्थात् उन दोनों की पूर्व अवस्थायें नष्ट हो जाती हैं और एक तीसरी ही अवस्था उत्पन्न हो जाती है, उनमें एकरूपता हो जाती है। यही कारण है कि दो अधिक गुणवाले का ही बन्ध होता है, सम या जघन्य गुणवालों का नहीं। यदि दो अधिक गुणवाले शक्त्यंशधारकों को पारिणामिक न माना जाए तो बन्ध अवस्था में भी सफेद और काले तन्तुओं से बने हुए कपड़ों में तन्तुओं के समान पृथक्-पृथक् ही रहेंगे, उनमें एकत्व परिणमन न हो सकेगा।

Comments : Origination of a new mode is 'Pāriṇāmikatva' or absorbing nature. For instance, treacle full of sweetness transforms particles of dust etc. that surround it by imparting sweetness to it. Similarly the one having four degree of property transforms the one with two degrees in its own property. That is, their earlier states disappear and a new state emerges; they intermingle and become one entity. This is the reason why the combination of higher degree by two takes place and that not of equal degrees or lesser degree ones. If the two more degree manifestation is not considered while forming a combination; the two would appear separate inspite of union as in the case of a cloth woven with black and white yarn. They would not be able to unite as one entity.

द्रव्य का लक्षण

Characteristics of Dravya

गुणपर्ययवद् द्रव्यम् ।।३८।।

(गुण-पर्ययवत् द्रव्यम्।)

Guṇaparyayavad Dravyam. (38)

शब्दार्थ : **गुणपर्ययवद्** – गुण और पर्यायवाला; **द्रव्यम्** – द्रव्य (है)।

Meaning of Words : **Guṇaparyayavad -** that having attributes and modifications; **Dravyam -** is substance.

सूत्रार्थ : जिसमें गुण और पर्याय हों, वह द्रव्य है।

English Rendering : That which has attributes and modes is a substance.

टीका : द्रव्य में भेद करने वाले धर्म को गुण कहते हैं। इससे एक द्रव्य, दूसरे द्रव्य से अलग पहचान बनाता है। इससे द्रव्य की धारा में एकरूपता रहती है। गुण अन्वयी होते हैं अर्थात् वे कभी पृथक् नहीं होते।

पर्यायें व्यतिरेक अर्थात् क्रम से परिवर्तित होती रहती हैं। वे द्रव्य की विकार होती हैं। गुण और पर्यायों से युक्त द्रव्य होता है। पूर्व सूत्र 29 में द्रव्य को उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य-युक्त कहा गया है। इस सूत्र का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक द्रव्य अनन्त गुणों का और क्रम से होने वाली अनेक पर्यायों का पिण्ड मात्र है। जीव में ज्ञानादि का, पुद्गल में रूप-रसादिक का, धर्म द्रव्य में गति हेतुत्व का, अधर्म द्रव्य में स्थिति हेतुत्व का, आकाश में अवगाहनत्व का और काल द्रव्य में वर्तना का कभी विच्छेद नहीं होता। इसलिये वे ज्ञान आदि उस-उस द्रव्य के गुण हैं। परन्तु वे गुण सदा काल एक से नहीं रहते, प्रति समय उनमें परिवर्तन होता रहता है। द्रव्य सदा इन गुण तथा पर्यायों में रहता है, इसलिये द्रव्य को 'गुणपर्ययवद्' कहा गया है। फिर भी गुण और पर्याय को द्रव्य से सर्वथा भिन्न नहीं जानना चाहिए। वे दोनों मिलकर द्रव्य की आत्मा हैं। इसका अभिप्राय यह है कि गुण और पर्याय को छोड़कर द्रव्य कोई स्वतन्त्र वस्तु नहीं है।

Comments : Quality is concomitant i.e. inseparable from substance or character which distinguishes one substance from all others is called a quality. It establishes an identity of one substance from all others. It enables stream of continuity or uniformity of a substance to exist. That is the attributes are inseparable.

Modes are modifications which undergo changes from one to the other in a sequence. These are perversions of a substance. Substance is an aggregate of quality and mode. In the commentary of previous

Sūtra 29, a substance is said to have origination, disappearance and permanence. The essence of this Sūtra is that every substance is a mere aggregate of infinite qualities and modes. The modes occur sequentially. Quality in the form of knowledge etc. possessed by a soul; touch, taste etc. in Pudgalas, facilitating motion by Dharma substance, facilitating rest by Adharma substance, providing space by Ākāśa and measurement of change by Kāla do not disappear at any time. These knowledge etc. are the corresponding qualities of each of the substance. These qualities do not however remain the same all the time; they continue to undergo changes. Substance exists all the time possessed by these qualities and modes. Therefore substance is described as 'Guṇaparyayavad' i.e. which has an aggregate of qualities and modes. Inspite of this, a substance can not exist devoid of qualities and modes. Both together constitute the spirit of a substance. Its meaning is that devoid of qualities and modes, a substance has no independant existence.

काल द्रव्य

Kāla Substance

कालश्च ।।३९।।

(कालः च।)

Kālaśca. (39)

शब्दार्थ : **कालः च** – काल भी (द्रव्य है)।

Meaning of Words : **Kālaḥ Ca -** Kāla (time) is also (a substance).

सूत्रार्थ : काल भी द्रव्य है।

English Rendering : Kāla (time) is also a substance.

टीका : सूत्र 29-30 और सूत्र 38 में द्रव्य के लक्षणों का वर्णन किया गया है। सूत्र 30 में द्रव्य को उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से युक्त कहा गया है और सूत्र 38 में उसे

गुण और पर्यायवाला कहा गया है। ये दोनों ही लक्षण काल में पाये जाते हैं, इसलिये काल भी द्रव्य है, ऐसा इस सूत्र में बताया गया है। काल में ध्रुवता स्व-निमित्तक है, क्योंकि उससे अपने स्वभाव की व्यवस्था होती है। उत्पाद और व्यय पर-निमित्तक हैं और अगुरुलघु गुणों की अपेक्षा स्व-निमित्तक भी हैं। काल के साधारण और असाधारण रूप दो प्रकार के गुण भी हैं। उनमें से असाधारण गुण वर्तना हेतुत्व है और साधारण गुण अचेतनत्व, अमूर्तत्व, सूक्ष्मत्व, अगुरुलघुत्व आदि हैं। इसी प्रकार उत्पाद और व्यय पर्याय में भी घटित होता है।

काल द्रव्य जीव आदि अन्य द्रव्यों के समान न तो असङ्ख्यात प्रदेशी है और न अनन्त प्रदेशी है, किन्तु लोकाकाश के जितने प्रदेश हैं, उतने काल द्रव्य हैं और लोकाकाश के एक-एक प्रदेश पर एक-एक काल द्रव्य अवस्थित है।

एक पुद्गल परमाणु मन्द गति से एक आकाश प्रदेश से दूसरे आकाश प्रदेश पर जाता है और इसमें जो समय लगता है, वह समय ही काल द्रव्य की पर्याय है, जो कि अति सूक्ष्म होने से निरंश है। यदि काल द्रव्य को लोकाकाश के बराबर अखण्ड और एक माना जाता है तो इस अखण्ड समय पर्याय की निष्पत्ति नहीं होती, क्योंकि पुद्गल परमाणु जब एक कालाणु को छोड़कर दूसरे कालाणु के प्रति गमन करता है तब वहाँ दोनों कालाणु पृथक्-पृथक् होने से समय भेद बन जाता है।

Comments : The characteristics of a substance have been described under comments of Sūtra 29-30 and Sūtra 38. Under comments of Sūtra 30, substance is characterized by origination, disappearance and permanence and under comments of Sūtra 38, it is said to be an aggregate of qualities and modes. Both these characteristics are present in Kāla and therefore Kāla is also stated to be a substance in this Sūtra. The permanence of time according to its internal cause consists in the persistence of its own nature. Origination and disappearance of time are based on external causes and these are also due to internal causes in view of the rhythmic rise and fall affected by Agurulaghu Guṇa. The characteristics of time are also of two kinds - general and particular. The distinctive characteristic of time is in providing assistance in the changes of the mode of a substance i.e. Vartanā etc. and the general characteristics are such as inanimateness, imperceptibility, subtlity and individuality (Agurulaghu Guṇa). Similarly, mode is also characterized by origination and disappearance .

Kāla substance is neither having in-numerable space-points like substances as Jīva etc. nor has infinite space-points but Kāla substance has as many time particles as that of the space-points of Lokākāśa and one by one time particle is located in each space-point of Lokākāśa.

When one atom of matter moves from one space-point of Ākāśa to another at a moderate speed, time taken in such a movement is the mode of time substance; this mode is very subtle and without any other division (i.e. Niraṁśa). If the Kāla Dravya is considered as one-whole entity equal to that of Lokākāśa, then mode of time can not fit in, because when a matter atom moves from time particle to another time particle because of different entities of time particles, differentia of time results.

व्यवहार काल का प्रमाण
Extent of Practical Time

सोऽनन्तसमयः ।।४०।।

(सः अनन्त-समयः।)

So(a)nantasamayaḥ. (40)

शब्दार्थ : **सः**- वह (काल); **अनन्तसमयः** - अनन्त समयवाला (है)।

Meaning of Words : **Saḥ -** that (Kāla); **Anantasamayaḥ -** (is) of infinite Samayas.

सूत्रार्थ : वह काल अनन्त समयवाला है।

English Rendering : The Kāla consists of infinite 'Samayas'.

टीका : यद्यपि वर्तमान काल एक समयवाला है तो भी अतीत और अनागत (भविष्य) के अनन्त समय हैं; ऐसा मानकर काल को अनन्त समयवाला कहा गया है। अथवा, मुख्य काल का निश्चय करने के लिये यह सूत्र कहा गया है। तात्पर्य यह है कि अनन्त पर्यायें वर्तना गुण के निमित्त से होती हैं, इसलिये एक कालाणु को उपचार से अनन्त कहा है। समय काल के उस छोटे से छोटे अंश को कहते हैं, जिसका बुद्धि के द्वारा विभाग न हो सके।

Comments : Although present time consists of one 'Samaya' or instant, yet the past and future are of infinite 'Samayas'. Considering this, Kāla is said to be of infinite 'Samayas'. Or this Sūtra is intended to determine the real time. Though the unit of time is one Samaya, figuratively it is said to consist of infinite Samayas as it is the cause of the continuity underlying infinite modes. 'Samaya' is defined as the smallest unit of time which can not be further divided by an intellect or imagination.

गुणों का लक्षण
Characteristics of Attributes

द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ।।४१।।

(द्रव्य-आश्रयाः निर्गुणाः गुणाः।)

Dravyāśrayā Nirguṇā Guṇāḥ. (41)

शब्दार्थ : **द्रव्याश्रयाः** – द्रव्य के आश्रय; **निर्गुणाः** – गुण रहित; **गुणाः** – गुण हैं।

Meaning of Words : **Dravyāśrayā -** substratum of Dravya; **Nirguṇāḥ -** without attributes; **Guṇāḥ** - are attributes.

सूत्रार्थ : जो निरन्तर द्रव्य के आश्रित रहते हुए किसी अन्य गुणों को आश्रय नहीं देते हैं, वे गुण हैं।

English Rendering : Attributes always have Dravya as their substratum but they themselves are not substratum of any other attribute.

टीका : जिनका आश्रय द्रव्य हो, उसे द्रव्याश्रय कहते हैं और जो गुणों से रहित हैं, वे निर्गुण कहे जाते हैं। इन दोनों लक्षणों से युक्त गुण होते हैं।

पूर्व सूत्र 38 में द्रव्य को गुण और पर्याययुक्त कहा गया था; अतः यह स्पष्ट है कि गुण द्रव्य के आश्रित ही रहते हैं। द्रव्य आधार है और गुण आधेय। तैल जिस प्रकार के तिल के सब अवयवों में व्याप्त होकर रहता है, वैसे ही प्रत्येक गुण द्रव्यों के सभी

अवयवों में समान रूप से व्याप्त होकर रहता है। परन्तु किसी भी गुण में अन्य गुण नहीं पाये जाते। प्रत्येक गुण अपना विशेष प्रकार रखता है और इन गुणों के कारण एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य से भेद होता है।

ऐसे गुण प्रत्येक द्रव्य में अनन्त होते हैं। उनमें कुछ सामान्य और कुछ विशेष होते हैं। जो एकाधिक द्रव्यों में उपलब्ध होते हैं, वे सामान्य कहलाते हैं और जो प्रत्येक द्रव्य की विशेषता को व्यक्त करते हैं, वे विशेष गुण कहलाते हैं।

Comments : Those attributes which have substance as their substratum are called 'Dravyāśraya'. Those without qualities are 'Nirguṇa'. As such those attributes which are marked by both these characteristics, are qualities.

Under the comments of Sūtra 38, a substance is said to be an aggregate of qualities and modes. As such it is clear that the substance is the substratum of qualities. Substance is the base and qualities find support in the base. As the oil pervades all parts of oil-seed, similarly every quality pervades all parts of a substance. But the quality itself does not possess any other quality. Every quality has its own speciality and because of this speciality, one substance is distinguished from the other substance.

Such qualities in a substance are infinite. Out of these, some are general and some others are special. Those which are found in more than one substance are called general and those which reveal as a speciality of a substance are special qualities.

परिणाम का लक्षण

Characteristics of Modification/Transformation

तद्भावः परिणामः ।।४२।।

(तद्भावः परिणामः।)

Tadbhāvaḥ Pariṇāmaḥ. (42)

शब्दार्थ : **तद्भावः**– उसका होना; **परिणामः** – परिणाम है।

Meaning of Words : **Tadbhāvaḥ -** of that; **Pariṇāmaḥ -** resultant nature.

सूत्रार्थ : द्रव्यों का स्वभाव तद्भाव है, उसे ही परिणाम कहते हैं।

English Rendering : The nature of Dravyas is 'Tadbhāva' - that is the modification.

टीका : द्रव्य की पर्याय प्रति समय परिणमन करती रहती हैं, उसे ही उस द्रव्य का परिणाम या पर्याय कहते हैं। वह परिणाम द्रव्य से अभिन्न है। धर्म आदि द्रव्य गति आदि उपकार रूप प्रवृत्त होते हैं, वह परिणाम है। परिणाम का ऐसा लक्षण गुण रूप है। वे परिणाम अनादि परिणाम हैं; अर्थात् जब से द्रव्य है तब से ही उसके ये परिणाम हैं।

उत्पाद होने पर ही उसका व्यय सम्भव है। उत्पाद दो प्रकार का है ह्न स्व-निमित्तक एवं पर-निमित्तक। आगम में अगुरुलघु नाम के अनन्त गुण कहे गये हैं, जो प्रत्येक द्रव्य में रहते हैं। उन गुणों में छह प्रकार की हानि-वृद्धि हमेशा होती रहती है। उनके निमित्त से द्रव्यों में स्वभाव से ही सदा उत्पाद एवं व्यय आदि हुआ करता है। यह स्व-निमित्तक उत्पाद-व्यय है। धर्म आदि द्रव्यों की गति आदि देने का निमित्त पर-निमित्तक उत्पाद-व्यय है।

Comments : The mode of a substance continues to undergo changes all the time. This change is known as 'Pariṇāma' or 'Paryāya' of a substance. The same is an integral part of a substance. Substances like Dharma etc. facilitate movement etc.; these activities are their 'Pariṇāma' or modes. This Pariṇāma is a characteristic quality of a substance and these are from beginningless times i.e. this quality exists since the very beginning of the existence of a substance.

Origination is possible only when there is disappearance. Cause of origination is of two kinds - internal and external. In scriptures, quality of Agurulaghu has been described of infinite kinds. This is present in all substances. Rhythimic rise and fall of six kinds continue all the time in their qualities. Because of this, the internal origination and disappearance etc. continue to take place all the time. The cause of facilitating movement etc. by Dharma substance etc. is an external cause for origination and disappearance.

इति तत्त्वार्थसूत्रे पञ्चमोऽध्यायः।

End of Fifth Chapter of Tattvārthasūtra.